TEACHERS OF BIHAR

The Change Makers

पद्यपंकज

बिहार के शिक्षकों द्वारा रचित

जून 2025

अंक 10

मासिक कविता संग्रह

ई-पत्रिका तक पहुँचने के लिए क्यू आर कोड को स्कैन करें

teachersofbihar.padyapankaj.org

पद्यपंकज काव्य संग्रह

- पद्यपंकज मासिक पत्रिका जिसे टीचर्स ऑफ़ बिहार के तरफ़ से प्रकाशित किया जा रहा है। इस प्रकाशन में बिहार के शिक्षकों द्वारा स्वरचित कवितायें प्रकाशित हैं।
- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक का विक्रय नहीं किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से निःशुल्क उपलब्ध है।
- यह कविता 'Teachers of Bihar' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।
- पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
- पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुनः प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता है।

पद्यपंकज काव्य संग्रह

प्रकाशन सहयोग

प्रधान संपादक

देव कांत मिश्रा
मध्य विद्यालय धवलपुरा, सुलतानगंज, भागलपुर

संपादक

अनुपमा प्रियदर्शिनी
रा० उ० मध्य विद्यालय, दूधहन, रघुनाथपर, सिवान

सह - संपादक

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज, पटना

तकनीकी सहयोग

ई ० शिवेंद्र प्रकाश सुमन

नेतृत्वकर्ता

शिव कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय नारायणपुर, बिक्रम, पटना

शुभकामना संदेश

"पद्यपंकज" जैसी पत्रिका शिक्षकों की उस रचनात्मकता और सोच को सामने लाती है, जो अक्सर उनके पाठ्यक्रम और जिम्मेदारियों के बीच छिपी रह जाती है। यह जानकर बहुत खुशी हुई कि हमारे शिक्षकगण, अपनी व्यस्त दिनचर्या के बीच भी साहित्य और लेखन के प्रति इतनी संवेदनशीलता और समर्पण दिखा रहे हैं।

यह पत्रिका सिर्फ शब्दों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत दस्तावेज़ है— जो शिक्षा, विचार और भावनाओं के मेल से बना है। इसमें छपी हर रचना, एक शिक्षक के अनुभव, उसकी सोच और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी को दर्शाती है।

"पद्यपंकज" की पूरी टीम, संपादक मंडल और इसमें सहयोग देने वाले सभी शिक्षकों को मेरी ढेरों शुभकामनाएँ। उम्मीद करती हूँ कि यह प्रयास यूँ ही आगे बढ़ता रहे और नई पीढ़ी को एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता रहे।

13/04/25

डॉ रश्मि प्रभा

संयुक्त निदेशक

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

शुभकामना संदेश

"पद्यपंकज" जैसी रचनात्मक पहल यह सिद्ध करती है कि शिक्षक न केवल ज्ञान के दीप प्रज्वलित करते हैं, बल्कि समाज की सांस्कृतिक चेतना को भी जीवंत बनाए रखते हैं। यह पत्रिका उन भावनाओं, विचारों और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है, जो शिक्षकों के हृदय में पलती हैं और साहित्य के रूप में साकार होती हैं।

ऐसी पत्रिकाएँ शिक्षा को केवल पुस्तकों की परिधि में नहीं बाँधतीं, बल्कि सोच, अभिव्यक्ति और संवेदना को विस्तार देती हैं। यह प्रशंसनीय है कि हमारे शिक्षक अपनी व्यस्त दिनचर्या के साथ-साथ सृजनात्मक साहित्य के माध्यम से समाज को दिशा देने का कार्य कर रहे हैं।

मैं "पद्यपंकज" पत्रिका से जुड़े सभी शिक्षकों, संपादक मंडल और रचनाकारों को इस पुनीत कार्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। यह पत्रिका निरंतर पल्लवित और पुष्पित होती रहे, यही मेरी कामना है।

डॉ स्नेहाशीष दास
विभागाध्यक्ष,
विद्यालयी शिक्षा विभाग
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

प्रधान सम्पादक की कलम से....

हीन भावना त्याग कर, कदम बढ़ाएँ आप।
सत शिव सुंदर भाव की, छोड़ें पावन छाप।।

यदि हमें जीवन में आगे बढ़ना है तो सबसे पहले तुच्छ या हीन भावना का परित्याग करना पड़ेगा। चाहे वह साहित्य समृद्धि, उसके निरंतर हितचिंतन या अन्य कला कौशल की बात हो। हीन समझने के कारण ही हम अकारण अपनी बहुत हानि कर बैठते हैं। इस संसार में प्रायः प्रत्येक मनुष्य स्वयं में किसी- न- किसी प्रकार की कमी या अभाव का अनुभव करता है तथा इस रोग का रोगी बना रहता है। इससे कारण वह अपने तन के साथ- साथ मन को खोखला कर रहा है। क्या ऐसा करने से साहित्य का सोपान मजबूत हो सकेगा? क्या नाकारात्मक भाव से हम दूसरों में आत्मविश्वास की झलक दिखला सकते हैं? यथार्थ के धरातल पर देखा जाए तो यह असंभव है। सच कहा जाए तो हम अपने भीतर साकारात्मक भाव को पैदा कर तथा उसे वैचारिक धरातल पर ठोस कर ही आगे बढ़ सकते हैं। अतः सबसे पहले हम सभी को अपनी चिंतन पद्धति को वैज्ञानिक एवं विषयगत बनाने का प्रयास करना है। अंतर्मन झाँक कर देखना है कि कहीं हीनता का कीड़ा तो नहीं सता रहा है। यदि ऐसा है तो, तो उसे तत्काल पीछा छुड़ाने का प्रयत्न कीजिए। इच्छा शक्ति व परस्पर तालमेल को मजबूत बनाते हुए अवचेतन में व्याप्त दूषित भाव का उन्मूलन कीजिए। अपने व्यक्तित्व को पुनः प्रक्षालित करते हुए नवस्फूर्ति व विकासोन्मुखी चेतना को सुगठित कर अपनी खुली आँखों से देखिए आपकी कमियाँ आपको ललकार रही हैं कि यदि आपको प्रगति पथ पर बढ़ना है, सफलता का वरन करना है तो अपनी इच्छाशक्ति, जीजीविषा व आत्मविश्वास को गले लगाइए। पद्यपंकज पत्रिका का जून अंक सच में आपके मन को सुखद व तरोताजा कर देगा।
साहित्यिक रस से सराबोर कर देगा। अंत में अपने मित्र बंधुओं एवं बहनों से यही कहना चाहूँगा-
सुनिए सबकी बात को, करिए चिंतन ध्यान।
सुंदर लेखन कार्य से, पाएँ नित सम्मान।।

देवकांत मिश्र 'दिव्य'
मध्य विद्यालय धवलपुरा, सुलतानगंज, भागलपुर

अनुक्रमणिका

शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1. आम फलों का राजा	अमरनाथ त्रिवेदी	10
2. बचपन	स्नेहलता द्विवेदी 'आर्या'	11
3. सीख विजात छंद मुक्तक	राम किशोर पाठक	12
4. दिल तो बच्चा है जी	रत्ना प्रिया	13
5. हमहु स्कूल जैबय	कुमकुम कुमारी "काव्याकृति"	14
6. बहुत गरम हुए सूरज दादा	अमरनाथ त्रिवेदी	15
7. बचपन	रूचिका	16
8. क्या मैं अबोध हूँ	राम किशोर पाठक	17
9. भाषा शिक्षण में अंग्रेजी का महत्व	राम किशोर पाठक	18
10. मौसम का रुख गया बदल	राम किशोर पाठक	19
11. अंग्रेजी भाषा में शिक्षण की सार्थकता	अमरनाथ त्रिवेदी	20
12. धरती की पुकार	स्नेहलता द्विवेदी 'आर्या'	21
13. पर्यावरण की समस्या और निदान	अमरनाथ त्रिवेदी	22
14. आओ पेड़ लगाए हम	रत्ना प्रिया	23
15. विश्व पर्यावरण दिवस	रामपाल प्रसाद सिंह	24
16. आओ मिलकर पेड़ लगाएँ	देवकांत मिश्र 'दिव्य'	25
17. पेड़ लगाओ पर्यावरण बचाओ	मृत्युंजय कुमार	26
18. कहर कुदरत का	बिंदु अग्रवाल	27
19. खूब लगाएँ पेड़	मनु कुमारी	28
20. धरा को बचाएँ	रूचिका	29
21. निहार रहा हूँ मैं	रामपाल प्रसाद सिंह	30
22. धरती की पुकार	कुमकुम कुमारी "काव्याकृति"	31
23. गंगा दशहरा	राम किशोर पाठक	32
24. छुट्टियों का आनंद	मृत्युंजय कुमार	33
25. स्वस्थ जीवन जीने की तैयारी	अमरनाथ त्रिवेदी	34
26. खाद्य सुरक्षा पर रखना ध्यान	मृत्युंजय कुमार	35
27. नर-नारी दोनों का जग में	राम किशोर पाठक	36
28. मैं पथ का निर्भीक राही	कंचन प्रभा	37
29. मैं नारी हूँ	स्नेहलता द्विवेदी 'आर्या'	38
30. महासागर	राम किशोर पाठक	39
31. बच्चों की चाह	बिंदु अग्रवाल	40
32. खुद पढ़कर तू मुझे पढ़ाना	रामपाल प्रसाद सिंह 'अनजान'	41
33. उड़ान	रूचिका	42
34. गर्मी की छुट्टी का आनंद	अमरनाथ त्रिवेदी	43
35. शिक्षा का महत्व	मृत्युंजय कुमार	44
36. माँ भारती की शान बढ़ाएँ	अमरनाथ त्रिवेदी	45
37. गर्मी की छुट्टी है आई	राम किशोर पाठक	46
		47

शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
38. नीर भूगर्भ का जानिए	राम किशोर पाठक	48
39. भूगर्भ जल की महत्ता	अमरनाथ त्रिवेदी	49
40. भूगर्भ जल	रामपाल प्रसाद सिंह 'अनजान'	50
41. भूजल का दोहन करें नहीं	राम किशोर पाठक	51
42. नन्हा पौधा	बिंदु अग्रवाल	52
43. पड़ती गर्मी प्रचंड है	राम किशोर पाठक	53
44. हादसा	रामपाल प्रसाद सिंह 'अनजान'	54
45. इंसानियत के मसीहा संत कबीर	अमरनाथ त्रिवेदी	55
46. नमन दधीचि	स्नेहलता द्विवेदी 'आर्या'	56
47. अहमदाबाद विमान दुर्घटना	राम किशोर पाठक	57
48. अधूरा सफर	बिंदु अग्रवाल	58
49. उफ़..! गर्मी	रामपाल प्रसाद सिंह 'अनजान'	59
50. अहमदाबाद हवाई हादसा	अमरनाथ त्रिवेदी	60
51. नमन पिता को कीजिए	राम किशोर पाठक	61
52. जैसे पास हमारे पापा	स्नेहलता द्विवेदी 'आर्या'	62
53. पिता हीं हैं शान हमारी	मृत्युंजय कुमार	63
54. मेरे पिता	आशीष अम्बर	64
55. पिता	कुमकुम कुमारी "काव्याकृति"	65
56. मैं पिता बन गया हूँ	बिंदु अग्रवाल	66
57. रोको! रोते भगवान हैं	रामपाल प्रसाद सिंह	67
58. पिता	रूचिका	68
59. पिता	गिरीन्द्र मोहन झा	69
60. पिता व्योम के तुल्य हैं	देवकांत मिश्र 'दिव्य'	70
61. Father	Ashish Kumar Pathak	71
62. पितृ दिवस	पूजा कुमारी	72
63. गौ माता को हम सब जानें	राम किशोर पाठक	73
64. गर्मी छुट्टी मना रही हूँ	रामपाल प्रसाद सिंह 'अनजान'	74
65. कोयल	स्नेहलता द्विवेदी 'आर्या'	75
66. उमड़-घुमड़ कर बरसो बादल	अमरनाथ त्रिवेदी	76
67. मौसम गर्मी वाला आया	राम किशोर पाठक	77
68. पुस्तक है हम सब का साथी	अमरनाथ त्रिवेदी	78
69. शब्दों के हैं रूप निराले	राम किशोर पाठक	79
70. शब्द भेद की व्यापकता	अमरनाथ त्रिवेदी	80
71. शब्द भेद को जानें	राम किशोर पाठक	81
72. शब्द भेद की सार्थकता	अमरनाथ त्रिवेदी	82
73. वर्षा रानी	आशीष अम्बर	83
74. क्यों नहीं बरसता पानी	शैलेंद्र भूषण	84
75. पहली बूँद धारा पर आई	राम किशोर पाठक	85
76. भारत देश हमारा है	मृत्युंजय कुमार	86

शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
77. पिता समान कोई नहीं जग में	अमरनाथ त्रिवेदी	87
78. देशी खाना	जैनेन्द्र प्रसाद 'रवि'	88
79. योग जरूरी है	बिंदु अग्रवाल	89
80. योग	गिरीन्द्र मोहन झा	90
81. योग भगाए रोग	आशीष अम्बर	91
82. करें योग रहें नीरोग	मृत्युंजय कुमार	92
83. योग सौम्य संजीवनी	देवकांत मिश्र 'दिव्य'	93
84. योग दिवस	डॉ. स्नेहलता द्विवेदी 'आर्या'	94
85. आओ कर लें योग	राम किशोर पाठक	95
86. जोड़ें नाता योग से	जैनेन्द्र प्रसाद 'रवि'	96
87. योग भगाए रोग	नीतू रानी	97
88. योग की महिमा	अमरनाथ त्रिवेदी	98
89. Yoga: A delight	Ashish Kumar Pathak	99
90. आओ कर लें योग	मनु कुमारी	100
91. योग करें	अश्मजा प्रियदर्शिनी	101
92. आज से स्कूल है जाना	राम किशोर पाठक	102
93. बच्चों का स्वागत	मृत्युंजय कुमार	103
94. विनती करूँ मैं भगवान	अमरनाथ त्रिवेदी	104
95. भरना इन्हें उड़ान है	राम किशोर पाठक	105
96. मौसम हुआ सुहाना है	रत्ना प्रिया	106
97. शिक्षा का जीवन में महत्व	मृत्युंजय कुमार	107
98. बायस्कोप	रामपाल प्रसाद सिंह 'अनजान'	108
99. सामाजिक बदलाव में स्कूल की भूमिका	अमरनाथ त्रिवेदी	109
100. झूम-झूमकर बरसो बादल	अमरनाथ त्रिवेदी	110
101. विद्यालय संजोती, दिव्य ज्ञान सरिता	राम किशोर पाठक	111
102. नशा मिटाएँ	राम किशोर पाठक	112
103. विद्यालय और सामाजिक बदलाव	राम किशोर पाठक	113
104. सारे जग में नाम होगा उसी का	अमरनाथ त्रिवेदी	114
105. जगन्नाथपुरी रथयात्रा	राम किशोर पाठक	115
106. प्रकाश संश्लेषण	राम किशोर पाठक	116
107. अब सुबह हुई जागो	डॉ. स्नेहलता द्विवेदी 'आर्या'	117
108. माँ तुम कितनी अच्छी हो।	नीतू रानी	118
109. प्रेम जहाँ पग-पग मिलता	अमरनाथ त्रिवेदी	119
110. सोशल मीडिया	राम किशोर पाठक	120
111. समय सुहाने बचपन के	अमरनाथ त्रिवेदी	121

आम फलों का राजा है

बड़े बड़े और पीले पीले ,
होते आम बड़े रसीले ।
सभी फलों का राजा है यह ,
सभी फलों से ताजा है यह ।
आम धरती का अमृत फल है ,
चाहत बनी रहती हर पल है ।
जो भी खाता खुश हो जाता ,
सभी के मन को खूब है भाता ।
जून जुलाई में आम खूब हैं पकते ,
सभी बाजारों में यह खूब है दिखते ।
हम सब बच्चे खुश हो जाते ,
बड़े प्रेम से इसे हैं खाते ।
सेहत का यह बड़ा खजाना ,
मीठे स्वाद का सब दीवाना ।
किस्म इसके अनेक होते हैं ,
जीवन में रस अमृत बोते हैं ।
कच्चे आम खट्टे लगते हैं ,
कई रूपों में अचार बनते हैं ।
चटनी इसकी मजेदार है बनती ,
यह सब चटनी से अच्छी लगती ।
हम बच्चों को खूब यह भाए ,
यह फल वर्ष बाद मिल पाए ।
हर वर्ष आम का पेड़ लगाएँ ,
धरती को हम स्वर्ग बनाएँ।

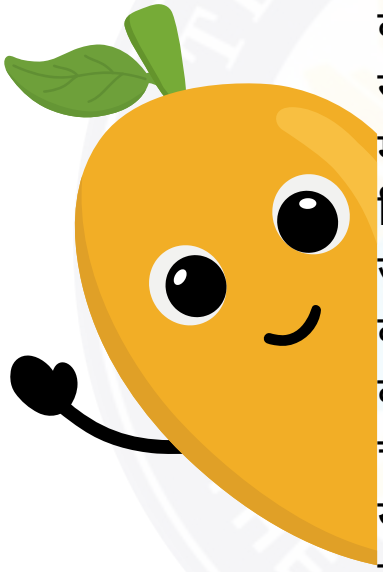

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

बचपन

सुन्दर!
मनमोहक, समय,
रुका नहीं क्यों?
शायद!
रुकता नहीं वक्त,
भुला नहीं क्यों?
खेल!
मैदान, दौड़,
रूठना , मनाना,
गुड़ियों की शादी
दूल्हा और बाराती,
रेत का घरौंदा!
सब गायब,
आखिर क्यों?
प्यारी सहेलियाँ,
अल्हड़ दोस्त,
सुन्दर बागीचा,
भूरी बछिया,
चितकबरा पिल्ला,
बचपन की गलियाँ,
केवल अब ख्याल!
काश!
समय वापस
आ जाता,
बचपन फिर भाता।

स्नेहलता द्विवेदी 'आर्या'
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज
कटिहार

सीख- विजात छंद मुक्तक

सदा वाणी सहज बोलें।
नहीं विद्वेष को घोलें।।
अगर कोई सताए तो।
नहीं चुपचाप से रो लें।।
अभी बचपन सुहाना है।
सभी सपने सजाना है।।
दबे कुचले नहीं रहना।
नहीं धीरज दिखाना है।।
खुशी आओ मनाना है।
कदम तुझको बढ़ाना है।।
अगर रोके कहीं कोई।
तुझे ताकत दिखाना है।।
मगर सतपथ तुझे चलना।
अडिग विश्वास पर रहना।
मिले जिस दिन प्रगति तुम्हें।
नसीहत ध्यान में रखना।।
हमारी सीख है इतनी।
कहे कोई हमें कितनी।।
भटकना छोड़कर प्यारे।
करें हम कर्म हो जितनी।।
यही नानी कही हँसकर।
भरोसा तुम करो खुद पर।।
वही होता सफल जग में।
चला जिसने यहाँ डँटकर।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज पटना।

दिल तो बच्चा है जी

बाल गीत

बचपन की अठखेली,
प्यारी-प्यारी बोली,
पल में रूठें, मानें,
हर गम से अनजाने,
मन तो सच्चा है जी ।
दिल तो बच्चा है जी ।
चलो हँसे-मुसकाएँ,
सुमन-सा खिलखिलाएँ,
गीत प्यार के गाएँ,
सबका मन बहलाएँ,
मौसम अच्छा है जी ।
दिल तो बच्चा है जी ।
दूर हटे अँधियारा,
जग में हो उजियारा,
नव-प्रकाश फैलाएँ,
तम को दूर भगाएँ,
इरादा पक्का है जी ।
दिल तो बच्चा है जी ।
बागों में अमराई,
कोयल गीत सुनाई
आओ झूला झूलें,
दूर गगन को छू लें,
अमिया कच्चा है जी ।
दिल तो बच्चा है जी ।

रत्ना प्रिया
उच्च माध्यमिक विद्यालय
माधोपुर
चंडी ,नालंदा

हमहु स्कूल जैबय

अंगिका कविता

बस्ता लेके हमहु मैय्या
स्कूल पढ़े जैबय।
पढ़-लिखकर हमहु
बड़ो आदमी बन जैबय।।
बड़ो आदमी बनी के मैय्या
खूब पैसा कमैबय।
और तोरा लय मैय्या
बढ़िया साड़ी लैबय।।
हमहु जैबय पढ़े बाबू
पढ़-लिखकर जब ऐबैय।
तोरा लिहे बाबू हम
चकाचक फटफटिया लैबय।।
पढ़-लिख जैबय जब हम
खूब पैसा कमैबय।
दादा-दादी कय हम
तीरथ पर लय जैबय।।
भैया साथे हमहु बाबु
स्कूल पढ़े जैबय।
पढ़-लिखकर हमहु
मास्टरनी बन जैबय।।
मास्टरनी बन कर हमहु
बुतरू कय पढ़ैबय।
पढ़ाय लिखकर ओकरा
सुंदर हम बनैबय।।

कुमकुम कुमारी "काव्याकृति"
मध्य विद्यालय बाँक, जमालपुर

बहुत गरम हुए सूरज दादा

बहुत गरम हुए सूरज दादा,
कोई उन्हें समझाए न।
कैसे हमारे दिन कटेंगे,
कोई उन्हें बतलाए न।
सूरज दादा बड़े सवेरे,
अपना रंग दिखाते हैं।
उसी अंदाज में सुबहोशाम,
वे अपनी धाक जमाते हैं।
आसमान से आग बरसता,
हवा भी आग सी लगती है ।
खेलें कूदें हम इसमें कैसे,
तवा सी धरती दिखती है।
कहीं आने जाने पर भी,
मम्मी का पहरा रहता है।
उनसे पकड़े जाने के भय से,
दिल भी सहमा रहता है।
खेलकूद में विघ्न पड़ने से,
गुस्सा भी हमें आता है।
खेल ही हमारे जीवन को,
सुबह शाम बहलाता है।
इतनी गर्मी रहने से,
मन अशांत हो आता है।
तन पर पसीना होने से,
दिल और कहीं खो जाता है।
सूरज से नित प्रार्थना करते,
कुछ तो ताप घटायें न।
हम बच्चों के लिए हमेशा,
राहत हमें दिलायें न।

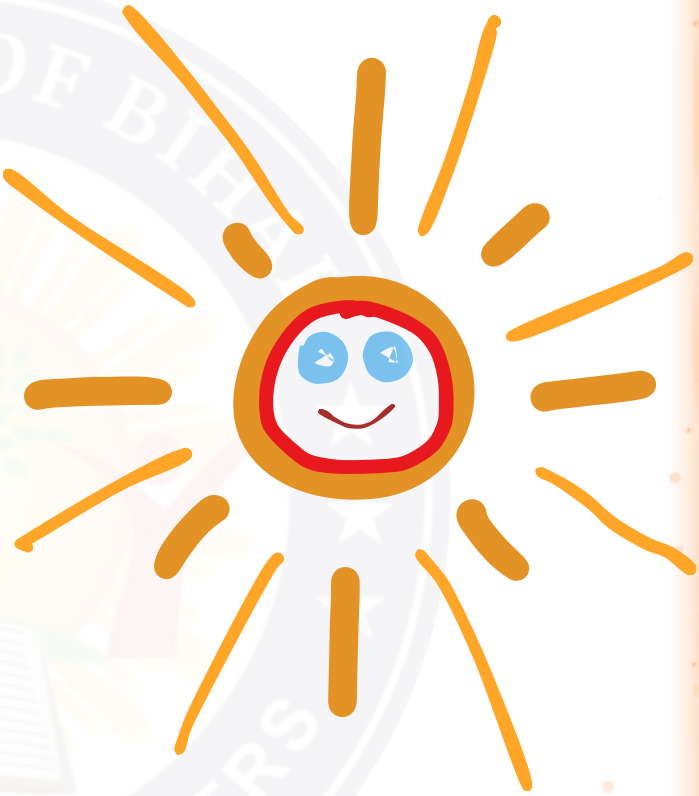

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

बचपन

बगीचे में नही जाता बचपन,
बागों की दौड़ नही लगाता बचपन,
मोबाईल की दुनिया में देखो
कैसे अब गुम हो जाता बचपन।
मोहल्ले की गलियाँ शांत पड़ी हैं,
भरी दुपहरिया जैसे वो डरी हैं,
वीडियो गेम में उलझा बचपन,
कंप्यूटर लैपटॉप के लिए अड़ी है।
कबड्डी खो-खो सब भूल रहे हैं
नही पसंद अब धूल रहे हैं,
बस्तों का बोझ भारी होता जाता,
पथ में बिखरे शूल रहे हैं।
चलो मिलकर बचपन को बचाएँ,
धूल-मिट्टी में खेलें और मौज मनाएँ
प्रकृति के बीच जब पले बढ़ें तब
स्वस्थ खुशहाल बचपन पाएँ।

रूचिका'
राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय गुठनी
सिवान बिहार

क्या मैं अबोध हूँ

माँ
सुनो तो,
एक बात जरा,
क्या मैं अबोध हूँ ?
पाँच वर्ष की हो गयी,
बहुत कुछ समझने भी लगी हूँ,
तुम्हारे साथ अक्सर हाथ भी बटाती हूँ।
माँ
तुम्हारी बेटी,
तुम्हारी परछाई हूँ,
फिर क्यों बोझिल सी,
तेरे आँखों में नजर आयी,
बेबस, लाचार सी क्यों हो गयी,
तेरा चेहरा साफ-साफ बता जाती है।
माँ
क्या तुम,
खुश नहीं हो?
पर इतना तो बताओ,
लड़कियाँ होती हीं नहीं तो,
क्या लोग कभी माँ कह पाते?
क्या माँ के बगैर दुनिया चलती है!
माँ
रोना नहीं,
मायूस होना नहीं,
तुम साथ देकर देखो,
जीवन के किसी मोड़ पर,
मैं लड़कों से कमतर नहीं हूँ।
इसे सिद्ध करने का वचन देती हूँ।
माँ
बेटी को,
गले से लगाई,
होठों पर मुस्कान लायी,
सारी चिंता छूमंतर हो गयी,
असीम आनन्द से आँखें भर आयीं,
बोली बच्चियाँ जल्द बड़ी हो जाती है।
माँ
तू सौभाग्य,
धन्य बनाती है।
ममता के साथ में,
बच्चियाँ तो जन्म से हीं,
माँ का रूप लेकर आती है।
वाकई लड़कियाँ हीं तो सृष्टि चलाती हैं।

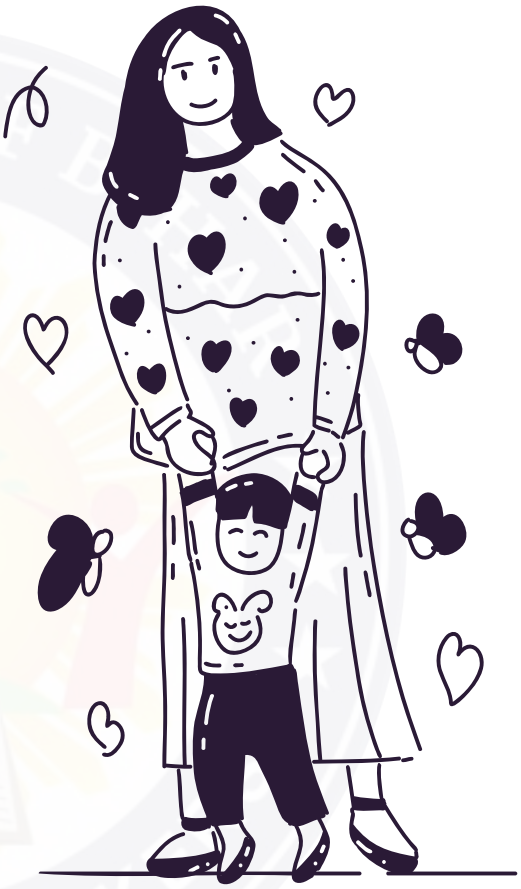

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश
पालीगंज पटना।

भाषा शिक्षण में अंग्रेजी का महत्व

ताटंक छंद गीत

भाषा चाहे कोई भी हो, वह संपर्क बनाती है।
हृदय भाव का द्वार खोलकर, सबको सहज मिलाती है ।।
अंग्रेजी रोमण में लिखती, बिटिया पाठ पढ़ाती है।
सुनकर मीठी वाणी उसकी, मन हर्षित हो जाती है।।
अंग्रेजी के शब्दों को तो, पलभर में रट जाती है।
हृदय भाव का द्वार खोलकर, सबको सहज मिलाती है ।।०१।।
बच्चों को हरपल सिखलाएँ, पढ़कर समझ बढ़ाना है।
बड़े काम की है यह भाषा, उसको जो अपनाना है।।
दुनिया के कोने-कोने में, सुलभ सहज मिल जाती है।
हृदय भाव का द्वार खोलकर, सबको सहज मिलाती है ।।०२।।
ऊँची शिक्षा को पानें में, तकनीकी बन जाने में।
मिले नहीं व्यवधान कभी भी, आगे बढ़ते जाने में।।
जो समाज में बोला करते, उनका मान बढ़ाती है।
हृदय भाव का द्वार खोलकर, सबको सहज मिलाती है ।।०३।।
मातृभाषा के संग सबको, अंग्रेजी पढ़ना होगा।
बिना रुकावट जीवन पथ पर, आगे को बढ़ना होगा।।
भाषा में अंग्रेजी शिक्षण, शामिल तब हो जाती है।
हृदय भाव का द्वार खोलकर, सबको सहज मिलाती है ।।०४।।
आओ समझें अंग्रेजी को, बच्चों ज्ञान बढ़ाना है।
रटने की आदत को छोड़ों, समझ-समझ पढ़ जाना है।।
इसको पढ़कर आगे बढ़कर, होती चौड़ी छाती है।
हृदय भाव का द्वार खोलकर, सबको सहज मिलाती है ।।०५।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश
पालीगंज पटना।

मौसम का रुख गया बदल

भूषण छंद गीत

सबको विचार करना यह, एक साथ है मिलजुल कर।
मौसम का रुख रहा बदल, जीना लगता है दूभर।।
रही नहीं धरती श्यामल, जाता है जिस ओर नजर।
करती धरती नेत्र सजल, काट दिए जबसे तरुवर।।
भूल गए हरियाली हम, खुशहाली का पग धरकर।
मौसम का रुख रहा बदल, जीना लगता है दूभर।।०१।।
बिना पेड़ का यह जीवन, बन जाता है एक कहर।
गाँवों का अब कर भक्षण, बनते जाते जहाँ शहर।।
बाग बगीचे रहे उजड़, बादल आता छिप-छिपकर।
मौसम का रुख रहा बदल, जीना लगता है दूभर।।०२।।
दिवस मनाएँ लेकर प्रण, खूब लगाए हम तरुवर।
स्वच्छ हमारा नभ थल जल, सदा परिवेश हो हितकर।।
आने वाली पीढ़ी सब, जीवन जी पाएँ बचकर।
मौसम का रुख रहा बदल, जीना लगता है दूभर।।०३।।
एक अकेला हीं तरुवर, करें प्रदूषण को कमतर।
भूतल का ताप नियंत्रण, प्राणवायु देता शुभकर।।
आओ अपनी भूल सहज, करें स्वीकार खुद बढ़कर।
मौसम का रुख रहा बदल, जीना लगता है दूभर।।०४।।
होना होगा हमें सजग, विकास का अब पथ गहकर।
सदा संतुलन कायम रख, कार्य करें जीवन हितकर।।
मुझसे तेरा कल शुभकर, कहता हरपल है तरुवर।
मौसम का रुख रहा बदल, जीना लगता है दूभर।।०५।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश
पालीगंज पटना।

अंग्रेजी भाषा में शिक्षण की सार्थकता

विश्वव्यापी अंग्रेजी भाषा का ,
कभी हम दरकिनार नहीं कर सकते ।
शिक्षण कार्य में इसकी सार्थकता को ,
कभी हम इनकार नहीं कर सकते ।
यह भाषा हमारी ज्ञान बढ़ाती है ,
विदेशों से भी संबंध जोड़ती है ।
भाषा शिक्षण में उज्ज्वल पक्ष बनकर ,
यह अमिट छाप भी छोड़ती है ।
अंग्रेजी भाषा की पहचान सर्वत्र ,
यह जन जन को भी मिलाती है ।
यह किसी भाषा की दीवार नहीं ,
यह विज्ञान की भाषा दिलाती है ।
प्रतियोगी परीक्षा में इसका मान ,
बढ़ चढ़कर भी बहुत बोलता है ।
यह सब भाषा में है व्यापक ,
यह ज्ञान की राहें खोलता है ।
कंप्यूटर की है यह अमृत भाषा ,
जो शिक्षण का माध्यम बनता है ।
इसकी सार्थकता सर्वत्र सिद्ध होती ,
यह सब देशों में भी जमता है ।
दुराग्रह से इस भाषा को ,
कभी छोड़ न आगे आना है ।
पढ़ाई से लेकर जीवनपर्यंत ,
इसे छोड़ न पीछे जाना है ।
यह भाषा ज्ञान , विज्ञान की कुंजी है ,
जिसमें तथ्यात्मक बातें होती हैं ।
यह भाषा शिक्षण की रीढ़ भी है ,
जो अनुपम ज्ञान भी ढोती है ।
उत्तरदायी शिक्षण की यह भाषा ,
जिसकी सार्थकता हर राहों में ।
खुलती है किस्मत जिन जन की ,
उनकी समस्त उड़ान की चाहों में ।
अंग्रेजी भाषा का विस्तार पटल ,
मिलता हर देश के कोने कोने में ।
इस माध्यम में भी सीखना जरूरी ,
बुद्धिमानी नहीं इसे कभी खोने में ।
भाषा में शिक्षण की सार्थकता को ,
यह कौशलपूर्वक घोलती है ।
अंग्रेजी भाषा विश्व की है प्यारी ,
यह विज्ञान की भाषा बोलती है ।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

धरती की पुकार

बचपन ने जहाँ देखा खेतों- खलिहानों को,
आज वहीं देख रहें उगते हुए मकानों को।
हवा में हर तरफ धुएँ का गुब्बार है,
साँस रुकने लगी हर शख्स लगता बीमार है।
विकास के नाम पर दुनिया क्या रौशन है ,
धरती का हो रहा हर तरफ शोषण है।
सुखे की चपेट में मर रहा किसान है,
दूषित हैं नदियाँ और शुष्क आसमान है।
सुनना ही होगा ये धरती की पुकार है,
संभल जा ऐ इंसा तू कितना नादान है
जल, थल नभ सब तो तुम्हारे साथ है,
सब्र कर, हरियाली ला, इसका ही नाम विकास है ।

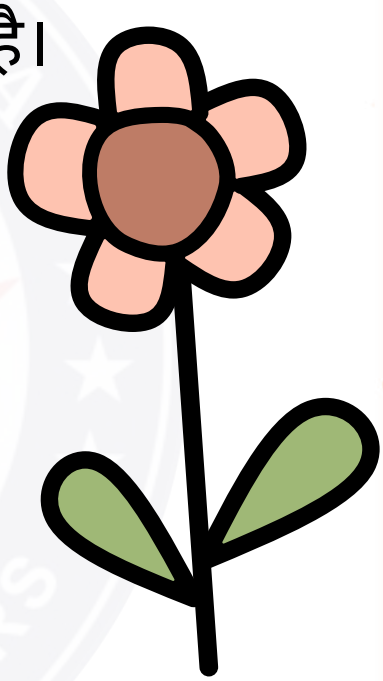

डॉ स्नेहलता द्विवेदी आर्या
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज,
कटिहार

पर्यावरण की समस्या और निदान

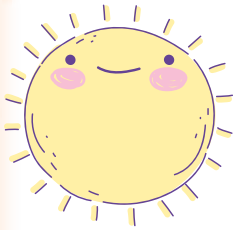

पर्यावरण की बिगड़ती सूरत ,
बड़ी समस्या बनी आज की है ।
कैसे इसे पटरी पर लाएँ ,
यह मुश्किल काम बड़े राज की है।
जीवन के स्वच्छंद जीने का ,
दुष्परिणाम है यह दिखा रहा ।
ज्यों ज्यों वनों की कटाई हो रही ,
यह कई बातों को भी सीखा रहा ।
बेमौसम की बारिश होती ,
बेमौसम ठंडक अड़ती है ।
बेमौसम के पतझड़ होते ,
बेमौसम की गर्मी पड़ती है ।
जिन बातों में लगा है मानव ,
वह कृत्रिमता की बरसात है ।
इससे पर्यावरण को क्षति पहुँचती,
यही बिगड़ते पर्यावरण की सौगात है ।
पर्यावरण असंतुलित होने से,
हर जीव में विकलता छाई है ।
प्रकृति से छेड़छाड़ के कारण ही ,
मुसीबत हर जीव पर बन आई है ।
ग्लोबल वार्मिंग बढ़ने से ,
ग्लेशियर सब भी पिघल रहे।
इससे समुद्र का स्तर बढ़ने से ,
हर जीव को भी निगल रहे ।

मुश्किल में है सबका जीवन ,
कुछ तो होगी इसकी कला ।
कुछ तो उपाय निकालें हम सब ,
सबका जिससे होए भला ।
विश्व पर्यावरण दिवस पर हम सब ,
इस समस्या की तहकीकात करें ।
इसके निदान के लिए जो बने विकल्प ,
सब मिल उसका बरसात करें ।
जीवन हम सबका तभी बचे जब ,
प्रकृति से छेड़छाड़ कभी न किया करें ।
संतुलन पर्यावरण का बना रहे ,
तभी सुखमय जीवन की आस भरें ।
पर्यावरण की रक्षा करने में ,
अधिकाधिक पेड़ लगाएँ ।
फिर धरती के महती आनन को ,
खूबसूरत सा चमकाएँ ।
सब जीवों में जो आह बनी है ,
यथाशक्ति तत्काल मिटाएँ ।
हरे भरे वृक्षों को पोषित करने में ,
हम सब मिलकर डट जाएँ ।
पर्यावरण की रक्षा करने में ,
मिलकर जोश जगाएँ हम ।
अपनी रक्षा खुद करने को ,
सदा ऐसे होश बढ़ाएँ हम ।

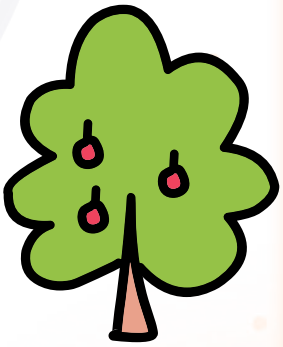

अमरनाथ त्रिवेदी'
उत्क्रमि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

आओ पेड़ लगाए हम

पर्यावरण शुद्ध रखना है तो, आओ पेड़ लगाएँ हम ।
धरती के सूने आँचल में, हरियाली विकसाएँ हम ।।
जीवनरक्षक संजीवनी को, धरती धारण करती है,
सृजन पालन-पोषण करती, नूतन प्राण वह भरती है,
पंचभूत संतुलित हो तो, धरा संतुलन पाएगी,
बाढ़, भूकंप, अनावृष्टि सम , विपदाएँ टल जाएगी,
अवांछनीय तत्वों से धरती, संरक्षित कर पाएँ हम ।
पर्यावरण शुद्ध रखना है तो, आओ पेड़ लगाएँ हम ।।
प्रकृति से निर्मित काया को, अप्राकृतिक नहीं बनाएँ हम,
पर्यावरण हो स्वच्छ हमारा, दृढ़ संकल्प उठाएँ हम,
क्षिति, जल, पावक, गगन समीर को, नियमित शुद्ध बनाएँगे,
जलवायु के बढ़ते ताप को, तभी दूर कर पाएँगे,
विश्व पटल पर छाया संकट, प्यारी धरा बचाएँ हम ।
पर्यावरण शुद्ध रखना है तो, आओ पेड़ लगाएँ हम ।।
बम-बारूद की भाषा में कब तक, दुनिया बात करेगी,
चंद-जमीं के टुकड़े खातिर, देश हित पर घात करेगी,
विषाक्त धुएँ के प्रलय से, कब तक जग बच पाएगा,
मानव अस्तित्व मिटाने का, भूल समझ कब आएगा,
प्रकृति का क्रोध जगाने वाले, दुश्मन न बन जाएँ हम ।
पर्यावरण शुद्ध रखना है तो, आओ पेड़ लगाएँ हम ।।

रत्ना प्रिया

उच्च माध्यमिक विद्यालय माधोपुर
चंडी ,नालंदा

कुण्डलिया

चिंतन हरदम हम करें, तभी मिलेंगे त्राण।
लिए दिवस पर्यावरण, चलें बचाने प्राण।।
चले बचाने प्राण, जिंदगी पावन कर लें।
हरियाली को देख, हृदय में सावन भर लें।।
चलते कवि "अनजान", प्रदूषण ढूँढ़े किंचन।
आगे बढ़कर हाथ बँटाएँ करते चिंतन।।

जीवन-स्तर उठता गया मिटी पुरानी रीत।
बिजली पानी सड़क से, बढ़ती सबकी प्रीत।।
बढ़ती सबकी प्रीत, नीर से नाता जोड़ें।
घर-घर में नलकूप, गंदगी पग-पग छोड़ें।।
कहते कवि "अनजान", करें खुद से परिसीमन।
सबका हो उपकार, सुरक्षित कर जन-जीवन।।

कचरे के अब रूप हैं, सूखा गीला खास।
ठोस तरल जैविक भला, सब में है दुर्वास।
सब में है दुर्वास, इसे जल्दी निपटाएँ।
रोगालय है खास, यहाँ ताला लगवाएँ।।
कहते हैं"अनजान", और हैं कचरे-पचरे।
फेंक रसायन ढेर हटेंगे व्यापक कचरे।।

आबादी की माँग पर, काटे जाते पेड़।
करते खूब मनुष्य हैं, परिसर आपस छेड़।।
परिसर आपस छेड़, इसी से बचना होगा।
अधिक लगाकर पेड़, हरित तल रचना होगा।।
कहते हैं"अनजान", रुके जल की बर्बादी।
स्वर्गिक सुख आनंद, लेगीं बढ़ी आबादी।।

रामपाल प्रसाद सिंह
प्रधानाध्यापक मध्य विद्यालय दरवेभदौर
पंडारक पटना

आओ मिलकर पेड़ लगाएँ

ताटंक छंद गीत

आओ मिलकर पेड़ लगाएँ, यह संकल्प हमारा है।
शुद्ध हवा पाने का सबको, केवल यही सहारा है।।
वसुधा का शृंगार सदा से, सुत समान शुचि प्यारे हैं।
पेड़ों से नित बढ़ती शोभा, सौम्य निराले न्यारे हैं।।
ये तो हैं जीवन की आशा, यही हमारा नारा है।
आओ मिलकर पेड़ लगाएँ, यह संकल्प हमारा है।
पेड़ हमारे जीवनदाता, इनको सदा बचाना है।
दान सुखद वायु का देते, सबको यही बताना है।।
पंछी की आँखों के तारे, करते नहीं किनारा है।
आओ मिलकर पेड़ लगाएँ, यह संकल्प हमारा है।
छाँव सर्वदा सबको देते, भाव यही बतलाना है।
कभी नहीं निज फल को खाते, यह सबको सिखलाना है।।
दान धर्म का वास हृदय हो, कहकर दिव्य पुकारा है।
आओ मिलकर पेड़ लगाएँ, यह संकल्प हमारा है।

देवकांत मिश्र 'दिव्य'
मध्य विद्यालय धवलपुरा, सुलतानगंज,
भागलपुर, बिहार

पेड़ लगाओ पर्यावरण बचाओ

आओ पेड़ लगाए हम।
पर्यावरण को स्वच्छ बनाए हम।।
पेड़ – पौधों के संरक्षण को,
आओ हमसब मिलकर कसम खाएँ।
पर्यावरण को नष्ट होने से बचाएँ,
संदेश ये हम जन-जन तक पहुँचाएँ।।
ज्यादा से ज्यादा पेड़-पौधे लगाएँगे।
पानी की हर एक बूंद बचाएँगे।।
खतरे में है धरती हमारी,
मिलकर इसे बचाएंगे।
ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाएँगे,
हम सब मिलकर पर्यावरण को बचाएँगे।।
आओ हम सब मिलकर ये कसम खाएँ,
आपस में मिलजुल कर पर्यावरण बचाएँ।
आइए मिलकर संकल्प लें,
एक-एक पेड़ लगाएँगे।
हरियाली हम लाएँगे,
पर्यावरण को स्वच्छ बनाएँगे।।

मृत्युंजय कुमार

नवसृजित प्राथमिक विद्यालय खुटौना यादव टोला
पताही, पूर्वी चम्पारण

कहर कुदरत का

कुदरत का यह कहर है,
या फिर मानव ने विष घोला है।
हाहाकार मचा धरती पर,
किसने द्वार विनाश का खोला है ?
लगातार कटते पेड़ो की
शाखाएँ यह बोल गई।
अत्याचार सहती धरती की,
सहनशक्ति अब डोल गई।।
धरती बाँधी,अंबर बाँधा,
पवन वेग न बाँध सके।
अपनी शक्ति के अस्त्रों को हम,
पानी पर न साध सके।।
तिनका- तिनका जोड़ा वर्षो से,
सब पल भर में बिखर गया।
मूक बने सब रहे देखते,
कुदरत के कहर से उजड़ गया।।
नाम विकास का लेकर धरती के,
कण- कण से खिलवाड़ किया।
कभी आग, कभी धरती डोली,
अब बिपरजोये का रूप लिया।।

बिंदु अग्रवाल
मध्य विद्यालय गलगलिया किशनगंज बिहार

खूब लगाएँ पेड़

कुदरत को हमने दिया, विविध रूप से छेड़।
आओ लें संकल्प अब , खूब लगायें पेड़।।

कूड़ा- कचरा का सखे,करो उचित निपटान।
वैज्ञानिक विधि हीं यहाँ, सबसे बड़ा निदान।।

धुआँ धूल से हो रहे , लोग बहुत बीमार।
पेड़ लगाकर हम करें, जन – जन का उपचार।।

पॉलीथिन का हम कभी, करें नहीं उपयोग।।
घर – घर में फैला रहा, जाकर सीधे रोग।।

नदियाँ सूखी तरु कटे, वन भी दिखे उदास।
जलचर – नभचर रो रहे, कैसे बूझे प्यास।।

प्राणवायु हमको मिले, आओ रोपें पेड़।
जंगल में भी दिख पड़े, बाघ, लोमड़ी भेड़ ।।

शादी हो या जन्मदिन, फिर कोई त्यौहार।
आओ लें संकल्प सब, वृक्ष लगाएँ यार।।

मनु कुमारी,
विशिष्ट शिक्षिका, मध्य विद्यालय सुरीगाँव, बायसी
पूर्णियाँ

धरा को बचाएँ

ये विकास की बढ़ती रफ्तार है,
पेडों पर हो रहा देखो वार है।
एक तरफ पेड़ लगाने की मुहिम,
एक तरफ जंगलों पर कर रहा अधिकार है।।
धरा को खूबसूरत अगर बनाना है,
पेड़ पौधे हमें चारों तरफ लगाना है।
विकास की रफ्तार को धीमी रखना,
कंक्रीटों के जंगल नही लगाना है।।
पेड़ है तभी साँसों की आवाजाही है,
पेड़ बिना बढ़ती देखो तबाही है।
प्रदूषित नही रहे वायु, धरा, जल,
पेड़ पौधों लगा, पाएँ वाहवाही है।।
प्लास्टिक का प्रयोग प्रतिबंधित करें,
चलो मिलकर एक प्रण दुहराएँ।
और पेड़ काटने से रोकें मिलकर,
अपने आस पास पेड़ पौधे लगाएँ।।

रूचिका
राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय
तेनुआ गुठनी सिवान बिहार

निहारे जा रहा हूँ मैं

फिर से चित्र बनाने को,
फिर से इत्र सुँघाने को,
लेकर खुशी के ढोल-, नगारे जा रहा हूँ मैं।
निहारे जा रहा हूँ मैं।
पुन: आदि सीमाने को,
द्वार-द्वार सिरहाने को,
गली खेत-खलिहानों को, पुकारे जा रहा हूँ मैं।
निहारे जा रहा हूँ मैं।
जहाँ चाहे मिले साथी,
बने बंदर कभी हाथी,
बनाए नाव कागज के, सँवारे जा रहा हूँ मैं।
निहारे जा रहा हूँ मैं।
कभी गिरना कभी उठना,
कभी रोना कभी हँसना,
कभी जिद्दी बना बैठा, दुलारे जा रहा हूँ मैं।
निहारे जा रहा हूँ मैं।
पतंगें भी उड़ाता था,
तितलियों को फँसाता था,
बिना परिधान के लँगटे-, उघारे जा रहा हूँ मैं।
निहारे जा रहा हूँ मैं।
कभी मैं था बहुत कच्चा,
हृदय था साफ अरु सच्चा,
वही सच्ची सरस जग के, सहारे जा रहा हूँ मैं।
निहारे जा रहा हूँ मैं।
जगत्"अनजान"अब कहता,
सुनहले दिन नहीं रहता,
उमर है साठ होने को, बिसारे जा रहा हूँ मैं।
निहारे जा रहा हूँ मैं।

रामपाल प्रसाद सिंह 'अनजान'
प्रभारी प्रधानाध्यापक मध्य विद्यालय दरवेभदौर
ग्राम पोस्ट थाना भदौर प्रखंड पंडारक पटना बिहार

धरती की पुकार

धरती कहे पुकार के,
अब सुन लो मेरे लाल।
हर सुख-सुविधा तुम यहाँ से पाते,
फिर,क्यों नहीं करते मेरा श्रृंगार।
धरती कहे.....
नदियाँ-झड़ने सब सूख रहे हैं,
देखो,जलस्तर पहुँचा पाताल।
यह सोच मैं तड़प रही हूँ,
कहीं प्यासा रह न जाए मेरा लाल।
धरती कहे.....
वन-उपवन भी कट रहे हैं,
देखो,भूमि हुई उजाड़।
वनस्पति-औषधि कहाँ से पाओगे,
क्यों नहीं करते तुम विचार।
धरती कहे.....
देखो मेरे सीने पर,
कचरा का लगा अंबार।
यह सोच मैं डर रही हूँ,
कहीं वायु हो न जाए विषाक्त।
धरती कहे.....
वैश्विक तपिश के चलते,
कहीं पड़ न जाए अकाल।
समय रहते तू चेत जा बच्चे,
माँ करती तुझसे गुहार।
धरती कहे.....

कुमकुम कुमारी 'काव्याकृति'
मध्य विद्यालय बाँक, जमालपुर, बिहार

द्विगुणित सुंदरी छंद गीत

मास ज्येष्ठ दशमी को, गंगा भू पर आना।
आज दशहरा गंगा, जन-जन में कहलाना।।
वंश इक्ष्वाकु जाने, राजा सगर बखाने।
अश्वमेध का घोड़ा, सारे लगे घुमाने।।
इंद्र भयभीत दौड़े, छल से अश्व चुराना।
आज दशहरा गंगा, जन-जन में कहलाना।।०१।।
सभी चहुँओर खोजें, घोड़ा कहीं न पाया।
खोज-खोजकर हारे, लोक पाताल आया।।
जहाँ कपिल तप साधे, छल क्या हुआ न जाना।
आज दशहरा गंगा, जन-जन में कहलाना।।०२।।
भ्रम सुत सगर निहारा, कटु था वचन सुनाया।
क्रोधित होकर ज्यादा, सबको वहाँ जलाया।।
प्रश्न भगीरथ भारी, उनको मोक्ष दिलाना।
आज दशहरा गंगा, जन-जन में कहलाना।।०३।।
किया तपस्या भारी, गंगा खुश हो पाई।
जब भूतल पर आई, मोक्षदायिनी माई।।
शंकर जटा बिखेरें, गंगा जटा बसाना।
आज दशहरा गंगा, जन-जन में कहलाना।।०४।।
हजार साठ सुतों को, मोक्ष तभी मिल पाया।
संग जगत यह सारी, अपना पाप मिटाया।।
माँ की महिमा भारी, दुनिया को बतलाना।
आज दशहरा गंगा, जन-जन में कहलाना।।०५।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज पटना।

छुट्टियों का आनंद

बड़ी मुद्दत से आई छुट्टियाँ।
सबों के चेहरे पर लाई खुशियाँ।।
परिवार के साथ-साथ दोस्तों संग छुट्टियों का आनंद उठायेंगे।
पर्यटन स्थल के साथ-साथ धार्मिक स्थल घूमने जायेंगे।।
देखो देखो सबों के चेहरे पर मुस्कान आई।
साथ में खुशियाँ ही खुशियां लाई।।
कोई जाएगा आगरा घूमने तो कोई काशी-मथूरा जायेगा।
कोई जाएगा केदारनाथ तो कोई पशुपतिनाथ जायेगा।।
न जाने फिर कब आएगी छुट्टियाँ।
न जाने फिर कब लाएगी खुशियाँ।।
छुट्टियों का भरपूर आनंद उठायेंगे।
मौज-मस्ती के साथ परिवार-दोस्तों संग घूमकर आयेंगे।।
छुट्टियों का भरपूर आनंद उठायेंगे।
छुट्टी बाद फिर वहीं स्कूल जायेंगे।।

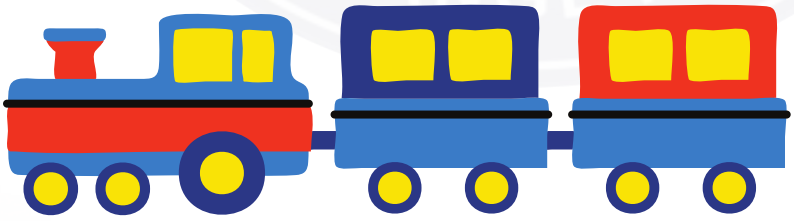

मृत्युंजय कुमार
नवसृजित प्राथमिक विद्यालय खुटौना यादव टोला
पताही, पूर्वी चंपारण

स्वस्थ जीवन जीने की तैयारी

जब जगे तभी सवेरा ,
यही सोच सदा नित बनी रहे ।
अब तो स्वस्थ रहने की ,
यह अक्ल सदा ही ठनी रहे ।
स्वस्थ तन रहने से ही ,
स्वस्थ सोच भी रहता ।
इसके बिना कोई नहीं किसी का ,
न संबंध कभी ठहरता ।
आहार विहार की सब बातों पर ,
गौर से चिंतन किया करें ।
इसमें यदि खामी हो तो
दूर ही इससे रहा करें ।
जीवन रहते ही सब कुछ ,
बिना स्वास्थ्य के सब है सूना ।
इसके बिना तो कुछ भी नहीं ,
यदि धन अर्जन भी हो दूना ।
समुद्री नमक , मैदा और चीनी ,
ये होते स्वास्थ्य के दुश्मन ।
ये तीन चीजे धीमा जहर समान ,
तन करता है नित क्रंदन ।
योग , ध्यान औ प्राणायाम को ,
सुबह शाम अपनाएँ ।
घर बैठे ही इससे स्वास्थ्य मिले ,
यह डॉक्टर के पास न लाए ।
सूर्योदय से नित पहले उठकर ,
जो नित्य क्रिया से निवृत्त होते ।
वे कहीं बेमतलब के ,
कभी अच्छे दिन नहीं खोते ।
सुबह शाम टहलने निकलें तो
तेज कदमों के साध चलें ।
गैस अफ़ारे से बचे रहेंगे,
और हर रोग हमेशा दूर टले ।
बिना स्नान नहीं कोई भोजन ,
इसका ध्यान सदा रखा करें ।
इससे बुढ़ापा दूर रहेगा ,
लंबी आयु भी जिया करें ।
अंकुरित अनाज खाने पर ,
सेहत भी तब खूब बनेगा ।
चेहरे पर लावण्यता आएगी ,
रुधिर भी तब खूब बढ़ेगा ।
हरी साग सब्जी से नाता जोड़ें ,
डिब्बा बंद चीजों से दूर रहें ।
तन मन भी तब स्वस्थ रहेगा ,
न दुःख तकलीफ भी कोई गहे।
रात्रि में भोजन पश्चात ,
दस मिनट नित टहला करें ।
इससे भोजन का शीघ्र पाचन होता
और मन भी अच्छा बहला करे ।
शारीरिक श्रम भी बहुत जरूरी ,
इससे तन भी ठीक रहेगा ।
यह बीमारी को दूर भगाए,
न दुर्बलता भी तनिक गहेगा।

अमरनाथ त्रिवेदी

उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

खाद्य सुरक्षा पर रखना ध्यान

सुरक्षित और स्वस्थ भोजन हो अपना।
तभी स्वास्थ्य बेहतर रहेगा अपना।।
मिलावटी खाद्य सामग्री पहचानें।
संतुलित आहार को अपनाना जानें।।
पोषक तत्व वाला भोजन करना।
समग्र स्वास्थ्य को पास में रखना।।
फास्टफूड से दूरी बनाएँ।
स्वच्छ एवं घरेलू भोजन को अपनाएँ।।
बाजारू खाद्य सामग्री पर रखना ध्यान।
मिलावटी खाद्य सामग्री से कभी न बनना नादान।।
अगर स्वास्थ्य के प्रति सजग रहना है।
उच्च गुणवत्ता की खाद्य सामग्री हीं घर लाना है।।
खाद्य सामग्री के उपयोग पर रखो विशेष ध्यान।
तभी होगा बेहतर स्वास्थ्य और बनोगे बेहतर इंसान।।

मृत्युंजय कुमार
नवसृजित प्राथमिक विद्यालय खुटौना यादव टोला
पताही,पूर्वी चम्पारण

नर-नारी दोनों का जग में

लावणी छंद गीत

प्रेम भाव जब रहता मन में, भरकर लगता गागर है।
नर- नारी दोनों का जग में, होता मान बराबर है।।
नर से नारी, नारी से नर, रिश्ता है पूरक जैसे।
ऊँच नीच का भेद अगर हो, बने वहाँ प्रेरक कैसे।।
कोई बहती बनकर नदियाँ, कोई बनता सागर है।
नर- नारी दोनों का जग में, होता मान बराबर है।।०१।।
एक धरा है दूजा अम्बर, मिलन बताती है जलधर।
जहाँ तपन है वहीं बरसना, सिखलाती मेघा चलकर।।
मिलन जहाँ होता दोनों का, कहते गंगा-सागर है।।
नर- नारी दोनों का जग में, होता मान बराबर है।।०२।।
रिश्तों की रखिए मर्यादा, जीवन सुंदर होना है।
जहाँ भेद है वहीं कलुष भी, कहता तब तो रोना है।।
दोनों होते सृष्टि की धुरी, जैसे राधा नागर है।
नर- नारी दोनों का जग में, होता मान बराबर है।।०३।।

सम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज
पटना।

मैं पथ का निर्भीक राही

पथ के राही
चले बेफिक्र
मंजिलें दूर हो
रास्ते कठिन हो
पथरीली डगर हो
काँटे बिछे हो
चलना है बस
चलते जाना
रुकना नहीं है
मेरा काम
मै हूँ पथ का
अडिग वह राही
मैं हूँ पथ का
निर्भीक राही
चला हूँ पथ पर
बढ़ने हेतु
जीवन में कुछ
करने हेतु
मैं हूँ पथ का
ऐसा राही
जले न जो
सूर्य के ताप से
थके न जो
राह के थकन से
मैं हूँ ऐसा निर्भीक राही।

कंचन प्रभा
मध्य विद्यालय गौसाघाट, दरभंगा

मैं नारी हूँ

मैं कल-कल बहती गंगा हूँ।
मैं यमुना सहित तिरंगा हूँ,
धरती की प्यास बुझाकर मैं।
हरियाली अवनि बहुरंगी हूँ,
मैं नारी हूँ, मैं नारी हूँ।
मैं जननी, जीवन की सृजनहार।
मैं ममता, मैं ही हूँ दुलार,
शैशव बचपन का मैं आधार,
मुझमें सृजन की सहस्त्रधार।
मैं स्वयं के खंडों को गढ़कर,
इस धरा सृष्टि की गंगा हूँ।
मैं नारी हूँ,मैं नारी हूँ ,
मैं बेटी, बहन, सखी, प्रियसी।
मैं माँ, ममता, तीरथ व्रत – सी,
सहस्त्र रूपों मे रचती -बसती।
नव जीवन को गढ़ती-बढ़ती,
मैं नारी रूप सहजतम हूँ।
इस सृजन का मैं अंतर्मन हूँ,
मैं नारी हूँ, मैं नारी हूँ।
मेरा तम – यम है यूँ विशाल।
अवनि – अम्बर त्रैलोक्य सार,
सुर -नर -मुनि और गन्धर्व ब्याल।
सबके नव-सृजन का मूलाधार,
फिर भी कल-कल निर्मल गंगा।
मैं सृजन -सहज रस हाला हूँ,
मैं नारी हूँ ,मैं नारी हूँ।
यह सौम्य मेरा, यह धार मेरा।
यह मृदु सुलभ व्यवहार मेरा,
मेरे आँचल के दूध-सिक्त।
जीवन – प्रणय आबन्ध – युक्त,
मैं सानिया, अवनि, मेरीकॉम।
मैं इंदु ,लता, कल्पना हूँ,
इस तरह असंख्य हैं रूप मेरे।
फिर भी धरनी पर भारी हूँ?
मैं नारी हूँ , मैं नारी हूँ।
अब सोच जरा तू मूढ़मते,
शक्ति, युक्ति मैं मुक्ति सखे।
अवनि,अम्बर, सागर,विहँसे
घर-आँगन में भी स्वर्ग बसे।
फिर मैं धरती पर भारी क्यों?
मैं नारी हूँ, मैं नारी हूँ।

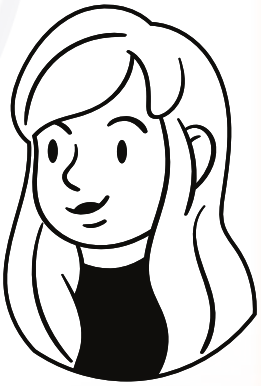

डॉ स्नेहलता द्विवेदी
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज कटिहार

महासागर

बाल कविता

आओ बच्चों तुम्हें बताएँ।
बात पुरानी याद दिलाएँ।।
सात समंदर कहती नानी।
दूर देश की कथा सुहानी।।
आओ जाने हम सच्चाई।
नानी कहती यह क्यों भाई।।
जल का विशाल भंडार यहाँ।
जल हीं जल चारों ओर जहाँ।।
उसे महासागर हैं कहते।
पादप जंतु सभी हैं बसते।।
अब इसे हम पाँच हीं जाने।
जग सारा जिसको पहचानें।।
प्रशांत को विशालतम जानें।
लघुतम रूप आर्कटिक मानें।।
अटलांटिक, हिंद सभी जानें।
दक्षिण महासागर बखानें।।
प्रशांत अटलांटिक दो गिनते।
उत्तर दक्षिण में जब चुनते।।
इनकी संख्या सात बताते।
वही कहावत सच हो जाते।।
पर्यावरण का पोषण करना।
जन-जीवन का इससे चलना।।
हमें बनाएँ जो है रखता।
उसे बनाएँ रखना पड़ता।।
दोहन से है इसे बचाना।
चाहो सदा अगर मुस्काना।।
इससे धरती नीली लगती।
नानी ऐसी भी है कहती।।
जल से हीं जीवन है होता।
जो समझा वह कभी न रोता।।
बातें कुछ और बताएगी।
कल फिर कहानी सुनाएगी।।

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज पटना।

बच्चों की चाह

हम फूल हैं नन्हीं बगिया के,
हमसे ही दुनिया महकेगी।
विद्यालय जाएँगे जब हम,
शिक्षा की ज्योति चमकेगी।।
जो ठाना है हमने मन में ,
हम वह करके दिखलाएंगे।
नेकी के रास्ते पर चलना,
हम दुनिया को सिखलाएँगे।।
मदद सदा गरीबों की करना,
धर्म यही अपनाना है।
मानवता हो मूल मंत्र,
सबको यह बतलाना है।।
खुशबू बनकर शिक्षा की,
हम इस जग को महाकाएँगें।
ज्ञान दीप की ज्योत जला,
हम अँधियारा दूर भगाएंगे।।
मत छीनो तुम हमसे नभ को,
उन्मुक्त गगन में उड़ने दो ।
मत तोड़ो सपने हमारे तुम,
जीवन पथ पर बढ़ने दो ।।

बिंदु अग्रवाल
मध्य विद्यालय गलगलिया

खुद पढ़कर तू मुझे पढ़ाना

काले तेरे केस निराले,
जामुन जैसे काले-काले,
फिर से नाम लिखालो दादू,
नंबर एक मिलेगा खाना।
खुद पढ़कर तू मुझे पढ़ाना।।
पहले पहले साथ चलोगे,
लेकर मेरे हाथ चलोगे,
जो भी पूछे यही बोलना,
मुझको भी है नाम लिखाना।
खुद पढ़कर तू मुझे पढ़ाना।।
बैठूँगा मैं संग बैठना,
बनकर ज्ञानी नहीं ऐंठना,
सबसे मीठे बोल-बोल कर,
देकर ताल ककहरा गाना।
खुद पढ़कर तू मुझे पढ़ाना।।
हे दादू तू साथी खोजो,
तेरे जैसे दादू जो जो,
अपनी बीती उनसे कहकर,
भारी मन हल्का कर जाना।
खुद पढ़कर तू मुझे पढ़ाना।।
विद्यालय के मध्य बाग है,
हरियाली में छुपा राग है,
खुशियाली में लोटपोट कर,
प्यार सरोवर में नहलाना।
खुद पढ़कर तू मुझे पढ़ाना।

रामपाल प्रसाद सिंह 'अनजान'
मप्रभारी प्रधानाध्यापक
मध्य विद्यालय डरे भदौर
पंडारक पटना बिहार

उड़ान

बच्चों तुम हो देश की जान,
बनाओ अपनी विशेष पहचान,
सीमाओं में मत बंधो तुम,
हो तुम्हारी उन्मुक्त उड़ान।
अक्षर-अक्षर से शब्द बनाओ,
शब्द को वाक्य में सजाओ,
हर वाक्य का अर्थ विशेष हो,
जिससे अपनी बातें कह पाओ।
अंक से कुछ ऐसे अवसर लाओ,
जोड़, घटाव, गुणा सीख जाओ,
भाग करो ताकि बाँट सको,
और फिर बराबर तुम चीजें पाओ।
तुम्हारी ज्ञान से ऊँची हो उड़ान,
जिससे मिले जीवन में सम्मान,
अंतरिक्ष तक पहुँचो, प्रगति करो,
हौसलों में तुम्हारी हो इतनी जान।
बच्चों तुम हो देश की धड़कन,
तुमसे ही जुड़ा है सबका ही मन,
उड़ान कभी कम न हो तुम्हारी,
निरंतर बढ़ता रहे तुम्हारा धन।

रूचिका
राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय तेनुआ गुठनी सिवान बिहार

गर्मी की छुट्टी का आनंद

हुई हर वर्ष गर्मी की छुट्टी,
इस बार भी वही हुई ।
हम बच्चों के लिए खुशखबरी ,
दिल को इस बार अधिक छुई ।।
मस्ती में हम सब बच्चे औ
थी योजना घूमने का बना हुआ ।
फिर मम्मी पापा का प्यार भी शामिल ,
था हम सबके साथ भी सना हुआ ।।
गए खुशी खुशी नानी के घर ,
खुशियाँ भी वहाँ बहुत मिलीं ।
खेले कूदे उन बच्चों के साथ ,
हर बात थी हमसे मिली जुली ।।
भाषा की दीवार न थी ,
और प्रेम भी बहुत ही बढ़ा हुआ ।
नाना नानी का प्यार भी इसमें ,
और भी अधिक था चढ़ा हुआ ।।
हँसते खेलते दस रोज बीते कैसे ,
न ध्यान तनिक भी हमें रहा ।
खूब मस्ती की सब बच्चों ने
औ दुःख तकलीफ न कोई सहा ।
घर आकर जब पढ़ने बैठा ,
तब ध्यान भी उतना नहीं लगा ।
खुशियों संग जो मस्ती चढ़ी थी ,
दे गई इसमें बहुत दगा ।।
हम बच्चों के लिए पढ़ना लिखना ,
बिल्कुल बड़ी जरूरी है ।
पर खेल कूद और मस्ती भी ,
हम सबकी बड़ी दस्तूरी है ।।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

शिक्षा का महत्व

मम्मी-पापा ने स्कूल में नाम लिखवाया।
कंधे पर बस्ता टंगवाया।।
घर से चले स्कूल छोड़ने।
शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने।।
स्कूल में पढ़ाई करना है।
शिक्षा के पथ पर आगे बढ़ना है।।
पढ़-लिखकर इतिहास लिखेंगे।
जग में अपना नाम करेंगे।।
शिक्षा पाकर बनेंगे महान।
होगा उनको मुझपर अभिमान।।
शिक्षा से ही जीवन का हर सपना होगा पूरा।
शिक्षा बिना जीवन लगता अधूरा।।
शिक्षा पाकर बनेंगे महान।
माता-पिता का होगा पूरा अरमान।।
शिक्षा से ही मिलता अच्छा संस्कार।
शिक्षा ही करता दूर जीवन का अंधकार।।
शिक्षा पाकर देश दुनियां में करेंगे काम।
करेंगे देश,दुनिया और जग मे नाम।

मृत्युंजय कुमार
नवसृजित प्राथमिक विद्यालय खुटौना यादव टोला
पताही, पूर्वी चंपारण

माँ भारती की शान बढाएँ

हम सब बच्चे मिलकर गायें ,
माँ भारती की शान बढ़ायें।
सुसंस्कारों को मन में भर लें ,
जीवन सुफल नित्य हम कर लें ।
नहीं किसी की हम करें बुराई ,
जो बन पड़े हम करें भलाई ।
गलत बातों से अपना मुँह मोड़ें ,
कृतज्ञता को हम कभी न छोड़ें ।
ज्ञान से हम सब नाता जोड़ें ,
अज्ञानता से शीघ्र ही नाता तोड़ें ।
मुश्किलों में अपना धैर्य न खोयें ,
अपना पराया कभी न बोयें ।
दिन पर दिन विज्ञान बढ़ाएँ,
नहीं कभी मुश्किल में पाएँ।
अपने पढ़ें औरों को पढ़ायें,
सुंदर सुंदर सीख सिखायें ।
शिक्षक की आज्ञा हम सब मानें ,
अपना जीवन सुफल तब जानें।
माता पिता का कहना मानें ,
दिन पर दिन सुअवसर पहचानें।
नित ही ऐसा काम करें हम ,
नहीं किसी से तनिक डरें हम ।
गलत संगति में कभी न जायें,
सदा सुसंगत राह अपनायें ।
बातों में हम मिसरी घोलें ,
ज्ञान के ताले नित ही खोलें।
वाणी सदा सत्य ही बोलें ,
भीतर बाहर एक से डोलें ।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

गर्मी की छुट्टी है आई

गर्मी की छुट्टी है आई।
नानी मुझको अभी बुलाई।।
मामा जी की होगी शादी।
बात सही कहती है दादी।।
नयी-नयी कपड़ों को लेना।
जिसे पहनकर लगें सलोना।।
बैंड बाजा बारात होगी।
जहाँ खुशियाँ सौगात होगी।।
छोटी मौसी जब आएगी।
अपनी मुनिया भी लाएगी।।
खेलेंगे हम साथ-साथ में।
मस्ती होगी बात-बात में।।
हम खूब मिठाई खाएँगे।
हम झूम-झूमकर गाएँगे।।
नयी नवेली हम मामी से।
बात करेंगे बस हामी से।।
मामा कहते चाँद उन्हें हैं।
मनभावन उनको लगते हैं।।
हम भी उनसे मजे करेंगे।
गुड्डा बनकर हम खेलेंगे।।
सबसे खूब ठिठोली होगी।
बेमौसम की होली होगी।।
गृहकार्य सभी निपटाएँगे।
छुट्टी अब वहीं बिताएँगे।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज पटना।

नीर भूगर्भ का जानिए

बातें कुछ करने आइए।
अपनी सोच तो बताइए।।
मीठे जल को पी पाइए।
खत्म होने से बचाइए।।
जीवन अपना हलकान है।
सारे लोग परेशान हैं।
विवश लाचार नादान हैं।
अंदर भूजल का मान है।।
भूतल से नीचे वास है।
जहाँ रंध्राकाश खास है।।
रेतों का अंतरकाश है।
वहाँ संचित जल मिठास है।।
आश्रित इसपर हो चूप है।
दोहन का जहाँ स्वरूप है।।
सूखने लगे नलकूप है।
बिगड़ती प्रकृति की रूप है।।
प्यारे बच्चों आगे आइए।
चेतना सबमें जगाइए।।
वर्षा संग्रहित कराइए।
तरुवर से भूमि सजाइए।।
भूगर्भ जल स्तर सुधारिए।
सारे लोग कुछ विचारिए।।
समस्या विश्व की मानिए।
अपना कुछ धर्म बखानिए।।
नीर भूगर्भ का जानिए।
पीड़ा को तो पहचानिए।।
पाठक जो कहता मानिए।
संरक्षित करना ठानिए।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज पटना।

भूगर्भ जल की महत्ता

आओ बच्चों भूगर्भ जल की
विशेषता को हम जानें।
जीवों के लिए यह अत्यंत जरूरी,
थोड़ा इस संदर्भ को भी पहचानें।
महती बालू भू के अंदर ही,
संचित इसमें जल रहता है।
मानव जब विज्ञान लगाता,
तब यह ऊपर बहता है।
भूगर्भ जल के महत्त्व को समझें
और इसके हर पहलू को हम मानें।
इसके बिना जीना है मुश्किल,
यह हर एक इंसान भी जाने।
जल ही नहलाता सबको
और जल ही भोजन करवाता।
बिना भूगर्भ जल के क्या
कभी यह संभव भी हो पाता?
जल है तो जीवन भी,
नहीं तो सब व्यर्थ यहाँ हो जाता।
जीवन में जितनी मस्ती है,
फिर लौट के कभी न आता।
भूगर्भ जल का दोहन करते,
पर ध्यान न उस पर देते।
यह बिल्कुल फर्ज मानव का बनता,
जरा इसे पहले ही संरक्षित कर लेते
फसलों की सिंचाई भी हम,
भूगर्भ जल से ही करते हैं।
इंसान या पशुओं का भी
इसी से प्यास बुझाते हैं।
सच में कितना अमृत है यह
बिना इसके जीवन न चल पाए।
कदम कदम पर इसकी जरूरत,
जिंदगी में यही भला कर जाए।
वर्षा का जल व्यर्थ है बहता,
इसका संचय करना आवश्यक।
जितना इसका सदुपयोग हो सके,
उतना ही परमावश्यक।
भूगर्भ जल का दोहन भी,
जीवन के लिए बड़ी मजबूरी।
पर वर्षा का जल संचय कर भी,
भूगर्भ में डालना अत्यंत जरूरी।
यह इतना महत्वपूर्ण घटक है,
जिससे जीवन की लाली आती।
इसके बिना सब सूना रहता,
यह सर्वत्र सृष्टि रूप दर्शाती।

अमरनाथ त्रिवेदी
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज पटना।

भूगर्भ जल

ज्ञान बहुत तेरे पास है।
मुझसे फिर रखते आस है।।
तो आओ मेरे साथ में।
हाथों को डालो हाथ में।।।
गहराई को जो नापते।
सागर के मोती भापते।।
जल संचित है भूगर्भ में।
बातें कर लें संदर्भ में।।
सागर तो जल की खान है।
खारे जल की पहचान है।।
मीठे जल तो फिर है वहीं।
भूतल में जाओ तो कहीं।।
मधु जल मिलते हैं बीच में।
जितना जाते हैं नीच में।।
खारे जल सागर हैं लिए।
मीठे जल बादल हैं दिए।।
बस मई-जून के मास में।
जल-संचित है तल खास में।।
हम पीने को खींचे उसे।
पाया हरदम नीचे उसे।।
बातें सब आपस में करें।
कीमत बूँद-बूँद में भरें।।
बर्बादी करना पाप है।
यह हर जीवन की माप है।।
हरियाली से ढक दो धरा।
तू श्रम करना थोड़ा जरा।।
वर्षा-जल का उपयोग हो।
जल संचित कर सहयोग हो।।

रामपाल प्रसाद सिंह 'अनजान'
प्रभारी प्रधानाध्यापक मध्य विद्यालय दर्वेभदौर
प्रखंड भंडारक पटना बिहार

भूजल का दोहन करें नहीं

लावणी छंद गीत

भूजल का दोहन करें नहीं, संग्रह बहुत जरूरी है।
बसा भूगर्भ में मधुरिम यह, बनी आज मजबूरी है।।
मान लिया सच भूमंडल पर, नीर तीन चौथाई है।
जिसका तीन शतांशी प्यारे, बस मधुरिम कहलाई है।।
सतही जल का सौवां हिस्सा, नदी, झील में पूरी है।
बसा भूगर्भ में मधुरिम यह, बनी आज मजबूरी है।।०१।।
भूजल मीठा-मीठा होता, प्रकृति कृपा इसको मानों।
भाग जलचक्र का कहता यह, मुझसे हीं जीवन जानों।
तेरे दोहन करने से अब, बढ़ती इसकी दूरी है।
बसा भूगर्भ में मधुरिम यह, बनी आज मजबूरी है।।०२।।
वर्षा होती तो यह भरता, पुनर्भरण से क्रम चलते।
कुछ हिस्सा अंदर बर्फ बना, पर्माफास्ट जिसको कहते।
निष्कासन हो चुका बहुत अब, जल स्तर लगे अधूरी है।
बसा भूगर्भ में मधुरिम यह, बनी आज मजबूरी है।।०३।।
रेतों के अंबार जहाँ हैं, भूतल के अंदर बसते।
रंध्राकाश उसे कहते हैं, जिसमें जाकर जल फँसते।।
नौ मीटर गहराई बढ़कर, बढ़ा रही मजदूरी है।
बसा भूगर्भ में मधुरिम यह, बनी आज मजबूरी है।।०४।।
सड़कों का हम जाल बिछाएँ, खड़ा महल ऊँचा-ऊँचा।
फैला कंक्रीट चारों ओर, मृदा का कद किया नीचा।।
तरुवर को भी काटे हमने, कह विकास की धूरी है।
बसा भूगर्भ में मधुरिम यह, बनी आज मजबूरी है।।०५।।
दोहन जल का रोक सके हम, सारे चेतन हो जाएँ।
खूब लगाएँ तरुवर फिर से, हम श्यामल धरा सजाएँ।।
माध्यम बनता पुनर्भरण का, लगे धरा भी नूरी है।
बसा भूगर्भ में मधुरिम यह, बनी आज मजबूरी है।।०६।।
वन, उपवन, तरुवर को सींचें, ताल, तलैया, पोखर में।
वर्षा जल का संचय करना, भूजल के संवर्धन में।।
जीने, पीने के लिए बना, भूजल हीं कस्तूरी है।
बसा भूगर्भ में मधुरिम यह, बनी आज मजबूरी है।।०७।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश,
पालीगंज, पटना, बिहार

नन्हा पौधा

दादा जी ने बीज लगाया,
दादी ने पानी डलवाया।
चुन्नू-मुन्नू दौड़े आएँ,
साथ में खाद भी लेकर आएँ।।
सात दिनों के बाद बीज ने,
नहीं-नन्हीं पलकें खोली।
बड़ी सलोनी है यह दुनिया,
छोटी सी कोंपल फिर बोली।।
धीरे-धीरे उस कोंपल ने,
नन्हें पौधे का रूप लिया।
हुआ बड़ा जब साँसें छोड़ी,
तब ऑक्सीजन हमें दिया।।
छाँव दिया,फल-फूल दिए,
लकड़ी से घर-द्वार बने।
बने शाख पर चिड़ियों के घर,
सुख देता है छाँव घने।।
आओ शपथ उठाएँ हम,
मिलकर पेड़ लगाएँ हम।
खुशहाल बने सब का जीवन,
धरती को स्वर्ग बनाए हम।।

बिंदु अग्रवाल
पमध्य विद्यालय
गलगलिया किशनगंज बिहार

पड़ती गर्मी प्रचंड है

लावणी छंद गीत

ताल, तलैया, सरवर सूखा, भू दिखता खंड-खंड है।
प्यासा पंछी खोज रहा जल, गर्मी बड़ा प्रचंड है।।
झुलस गया है बाग, बगीचा, नहीं कहीं हरियाली है।
फूल बिना उपवन अब सूना, कहता हरपल माली है।।
काट चुके जो हम वृक्षों को, मिलता उसी का दंड है।
प्यासा पंछी खोज रहा जल, पड़ती गर्मी प्रचंड है।।०१।।
गर्म हवा के झोंके बहते, नहीं शीतलता हम पाते।
तन में फोरे हो जाते हैं, ज्यों हम बाहर को जाते।।
जबतक जल से तन भिंगोए, तभी तक लगता ठंड है।
प्यासा पंछी खोज रहा जल, पड़ती गर्मी प्रचंड है।।०२।।
तन से खूब पसीना बहता, कपड़े लथपथ हो जाते।
छाँव देखकर बैठे रहते, काम नहीं कोई भाते।।
अर्धनग्न सा घूमा करता, लगते जैसे उदंड है।
प्यासा पंछी खोज रहा जल, पड़ती गर्मी प्रचंड है।।०३।।
साधन की भरमार पड़ी है, फिर भी मिलता कब राहत।
मार प्रकृति की जब पड़ती है, होते सब के सब आहत।।
लगता जैसे बड़े क्रोध में, आयें निकल मार्तण्ड है।
प्यासा पंछी खोज रहा जल, पड़ती गर्मी प्रचंड है।।०४।।
भूल हुई है क्षमा करो अब, जीवित जो रह पाएँगे।
त्राहि-त्राहि करता हूँ दिनकर, तरुवर सदा लगाएँगे।।
फूल रही साँसें सबकी अब, जरा भी नहीं घमंड है।
प्यासा पंछी खोज रहा जल, पड़ती गर्मी प्रचंड है।।०५।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज पटना।

हादसा

उज्जवला छंद

जब पग-पग होता हादसा।
मानव पर उभरा दाग-सा।।
हर घर में छाया शोर है।
बस आह-आह पुरजोर है।।
हम कुछ तो कर सकते नहीं।
बस दर्द बाँट सकते कहीं।।
दुखते दिल को विश्वास हो।
मानव-मानव में आस हो।।
लौटा नहीं कभी जो चला।
बस सूरज किस्मत का ढला।।
कुछ कर ले उनके नाम से।
आना-जाना कर काम से।।
सब कहते दुनिया गोल है।
“मैं ही हूँ”झूठा बोल है।।
गाड़ी चलती है और से।
देखा जगत नहीं गौर से।।
पायलेट केवल नाम है।
होता केवल बदनाम है।।
करने वाला है और भी।
नास्तिकता का है दौर भी।

रामपाल प्रसाद सिंह ‘अनजान’
प्रभारी प्रधानाध्यापक मध्य विद्यालय दर्वेभदौर
प्रखंड पंडारक पटना बिहार

इंसानियत के मसीहा संत कबीर

एक ऐसे संत कबीर हुए,
जो जमकर कुरीतियों पर वार किया ।
हिंदू मुस्लिम की दकियानूसी बातों पर ,
समग्र प्रचंड प्रहार किया ।
थे पंचमेल भाषा के वे अक्खड़ कवि ,
जो उचित अनुचित में फर्क किया ।
बिना कलम कागज पकड़े ही ,
नाम कवियों में अपना दर्ज किया ।
उनके लिखे दोहे आज भी ,
दिल को बहुत ही भाते हैं ।
कवियों में वे शिरोमणि ,
हमें याद बहुत वे आते हैं ।
साखी , सबद , रमैनी में इन्होंने ,
अपने भावों का प्रसार किया ।
ढोंग , पाखंड , जाति का भी
नहीं तनिक कभी साथ दिया ।
हिंदू , मुस्लिम सबको लपेटा ,
किया उजागर हर धर्म के पाखंड को ।
जमाने की डर उनको तनिक न थी ,
पाया था जब उस परमात्म अखंड को ।
जहाँ जहाँ कुरीति देखी ,
जमकर उसपर वार किया ।
नफरत , ढोंग जहाँ भी देखा ,
खुलकर खूब प्रहार किया

कबीर साहित्य में पंचमेल है भाषा ,
जो सबको प्रिय लगते हैं ।
उनकी वाणी में अक्खड़पन है ,
जो संदर्भ से सीधे जोड़ते हैं ।
दीवार नहीं तनिक भी भाषा की ,
उन्मुक्त है उनकी शैली भी ।
अंधविश्वास पर जब प्रहार हैं करते
तो नप जाते सारे थैली भी ।
अवसान समय तो गजब हुआ ,
प्राण छोड़ कबीर जब विदा हुए।
निष्प्राण शरीर उनके लेने को ,
हिंदू , मुस्लिम भी फिदा हुए ।
जब अंत समय काया को लेना चाहा ,
तब निष्प्राण शरीर वहाँ नहीं मिला ।
उस जगह तो केवल फूल ही फूल मिले ,
आधे कर उसे बाँट लिए रह न गई तब
शेष गिला ।
ऐसे अवतारी पुरुष कबीर ने ,
बहुत भ्रमात्मक बातें तोड़ी थीं ।
समाज में फैली कुरीतियों को ,
सबके समक्ष ही छोड़ी थीं ।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा

नमन दधीचि

बरगद का पेड़!
वर्षों से खड़ा ,
वसन्तों पतझडों का साक्षी,
धरती से करता प्यार,
धूप से बचाता,
देता शीतल छाया ।
बरगद घर की बरामदे से,
निहारता अपनी दलान,
खेत खलिहान , घर मचान,
ओत प्रोत अनन्य राग से,
भूत के लम्हों के निशान।
खेलती रहीं पीढ़ियाँ,इस आँगन में,
धूल से सने बच्चे,अल्हड़ मस्त निर्विकार।
कूदते स्वतः आ जाते,आलिंगन को,
गोद में, अविरल मोह रसधार।
बीत गया वक्त, यादें शेष,
अंतर्मन का आनंद अशेष।
फिर उम्र की ढलान,
शरीर होता असहाय,
गतिमान वक्त,
अनंत यात्रा की ओर स्वतः प्रस्थान।
वह बरगद अशेष,मेरे घर का विशेष,
बूढ़ा नहीं , गृहस्थ का सर्वस्व राग,
आस्था संस्कार और अनुराग।
दधीचि की अस्थियों से निर्मित आज,
बरगद की जरूरत कल और आज।
निश दिन जागृत चेतना का मिजाज,
नमन दधीचि का सतत प्रयास।

स्नेहलता द्विवेदी "आर्या"
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय
शरीफगंज, कटिहार

अहमदाबाद विमान दुर्घटना

दोहा छंद

माह जून पच्चीस की, तिथि बारह की बात।
उड़ते हीं विमान गिरा, लगा बड़ा आघात।।०१।।
दो सौ सत्तर जन मरे, बचा एक हीं जान।
हृदय विदारक दृश्य से, रोया हिंदुस्तान।।०२।।
एक आठ थी दोपहर, उड़ान भरा विमान।
नहीं मिनट भी देर की, होने में नुकसान।।०३।।
छात्र चिकित्सक कर रहे, बैठ जहाँ जलपान।
छात्रावास के छत पर, गिरता दिखा विमान।।०४।।
पाँच चिकित्सक संग में, गए छात्र के जान।
बीस हताहत वहाँ पर, करता क्या इंसान।।०५।।
छत के ऊपर जब गिरा, वह बोइंग विमान।
दो सौ बयालीस चढ़ें , यात्री भरे उड़ान।।०६।।
देश परदेश जा रहे, संग लिए मुस्कान।
दो सौ सत्तर हो चुकी, कितने लहु-लूहान।।०७।।
सभी बोइंग को कहे, है मजबूत विमान।
पूरी दुनिया में सदा, रहता इसकी शान।।०८।।
ढूँढ रहे कारण अभी, होते सब हलकान।
लौट कहाँ कोई सका, निकली जिसकी जान।।०९।।
हँसते- गाते लोग थें, लिए नया अरमान।
करवट पल ऐसा लिया, सबकी ले ली जान।।१०।।
राज्य गुजरात में घटा, विधि का रचा विधान।
मूर्ख सदा हम मानते, अपने हाथ कमान।।११।।
मृतक मोक्ष को प्राप्त हो, धीरज परिजन ज्ञान।
पाठक हरि वंदन करें, कृपा करो भगवान।।१२।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज
पटना।

अधूरा सफर

आँखो में नमी, होठों पे सिसक,
दे गए तुम कहाँ खो गए?
निकले घर से जो मंजिल के लिए,
रास्ते में ही क्यों सो गए?
हृदय व्याकुल, पथराई सी आँखे,
असहनीय दर्द से विचलित है।
निकले जो सफर में मंजिल के लिए
क्यों राहों में ही खो गए ?
किसी की माता,किसी की बहना,
किसी की भार्या रोई है।
जिसे देख पुलकित होते थे,
वह हँसी न जाने कहां खोई है।
न जाने कितनो का घर-आँगन,
बसने से पहले उजड़ गया,
देख धरा पे बिछी हैं लाशें,
पत्थर का दिल भी पिघल गया।
अब न लौटेंगे अपने घर,
मृत्यु की गोद में सो गए।
हो गए विलीन जो पंचतत्व में,
वह वासी स्वर्ग के हो गए।

बिंदु अग्रवाल
मध्य विद्यालय गलगलिया
किशनगंज बिहार

उफ़. ! गर्मी

बढ़ और रही है उफ.!गर्मी,
दिख नहीं रही कुछ भी नर्मी,
छाया नीचे भूखा-प्यासा,जीवन जलता है।
कहीं एक पत्ता हिलता है?!।
सुबह हुई सब भाग रहे हैं,
व्याकुल हो सब जाग रहे हैं,
सूर्य बदन से लिपट रहा जो,दिल को छिदता हैं।
कहीं एक पत्ता हिलता है?।।
ताल-तलैया जो दिखते हैं,
जलचर वहाँ कहाँ मिलते हैं।
धरती बैठी सीना फाड़े,तन-मन डिगता है।
कहीं एक पत्ता हिलता है?।।
निगल रही धरती हरियाली,
जीवन-रेखा मिटने वाली,
खड़ी हुई है आशा नभ पर,जलपुर दिखता है।
कहीं एक पत्ता हिलता है?।।
न जाने कहीं और बढ़ेगा,
जनजीवन भू पर कहरेगा,
जल-दुग्ध नहीं माँ के स्तन शिशु,रोता मिलता है।
कहीं एक पत्ता हिलता है?।।
जिसने भी संघर्ष किया है,
आगे चलकर हर्ष किया है,
जो छूट गया वो सूख गया,धूँ-धूँ जलता है।
कहीं एक पत्ता हिलता है?।।
ग्रीष्मकाल इस बार मिला है,
बच्चा सम्मुख पुष्प खिला है,
सुबह शाम ही लिखते-पढ़ते,घर में टिकता है।
कहीं एक पत्ता हिलता है?।।

रामपाल प्रसाद सिंह 'अनजान'
मध्य विद्यालय दरवेभदौर प्रखंड पंडारक
पटना बिहार

अहमदाबाद हवाई हादसा

बारह जून दो हजार पच्चीस को ,
फिर कलंकित हुआ जहाँन ।
ड्रीमलाइनर विमान की ,
बची न अपनी शान ।
अहमदाबाद से उड़ान भरते ही ,
गिरा तुरंत विमान ।
धूँ-धूँ कर यह जल उठा ,
न बची हॉस्टल की पहचान ।
देश विदेश के यात्री सभी ,
थे खुश कितने उस दिन !
पर एक ही झटके में ,
सबके कुटुंब हुए गमगीन ।
जीवित बचे यात्री एक ही ,
सौभाग्य था उसके साथ ।
दो सौ पचहत्तर जन मारे गए ,
उन्हें लगा दुर्भाग्य ही हाथ ।
हॉस्टल में डॉक्टर छात्र को,
तनिक भी न था ध्यान ।
इस तरह उनकी जान को ,
लील जाएगा विमान ।
क्या खुशी ; कितनी हँसी ,
थे सब यात्री के साथ ।
कुछ पलों में ऐसी दुर्घटना घटी ,
हो गए राख सब हाथ ।

लंदन की उस उड़ान में ,
सबके जाग रहे थे आस ।
सबके चेहरे पर मुस्कान थी ,
सबके सपने थे भी खास ।
सुखद सपने जो अँगारे बने ,
यह कैसा विधि विधान ?
एक एक जन जल मरे ,
यह कैसा हुआ निधान ?
कैसे खींच गई रेखा दुर्भाग्य की ,
इंजन दोनों हुए फेल ।
लगा दाँव तब जन पर ,
तब बचा न कोई खेल ।
सबके दुर्भाग्य साथ कैसे जुड़े ,
हुई यह अचरज की बात ।
जो चढ़े उस विमान में ,
सब पर लग गई एक ही घात ।
ब्लैक बॉक्स से पता चले ,
अंतिम पल क्या क्या हुआ था खास ।
पायलट को क्या पता चला ,
न जब बचने की थी कोई आस ।
हो न कोई ऐसी दुर्घटना कभी ,
न जान किसी की जाए ।
सुरक्षित सब सफर करें ,
न कोई कभी दुःख पाए ।

अमरनाथ त्रिवेदी
पूर्व प्रधानाध्यापक
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

नमन पिता को कीजिए

कहें जनक पालक उन्हें, जिन चरणों में धाम।
पिता वचन का मान रख, वनगामी श्रीराम।।०१।।
कदम बढ़ाना अंक दे, जिसका है शुभ काम।
नमन पिता को कीजिए, वही बैकुंठ धाम।।०२।।
कंधा बिठाकर जब चले, खुशियाँ मिली तमाम।
बचपन में राजा बनें, आज नहीं वह दाम।।०३।।
कहाँ शब्द सामर्थ्य है, कह पाए अविराम।
जिनकी छाया में सदा, सफल हुआ हर काम।।०४।।
सुपुत्र अपने कर्म से, करता रौशन नाम।
चौड़ा सीना तब लिए, चलते अपने ग्राम।।०५।।
पुत्र मोह धारण किए, पिता करें हर काम।
भला सदा सोंचा करें, जैसे दशरथ राम।।०६।।
दूर कभी जाना नहीं, छोड़ पिता का धाम।
नहीं चैन मिलता कहीं, जीवन है संग्राम।।०७।।
पिता हमारा मान है, उनसे अपना नाम।
वृद्ध हुए हो पिता तो, हर्षित कर लो थाम।।०८।।
सिर पर साया पिता का, हरता हर संताप।
किए अनादर जो कभी, बिगड़े सारा काम।।०९।।
नहीं रहा चिंता कभी, सुखमय आठों याम।
पिता चरण पाठक सदा, पाएँ चारों धाम।।१०।।
वचन पिता की मानिए, जैसे कोई मंत्र।
चरण बैकुंठ द्वार सम, गहिए शुभ यह तंत्र।।११।।
मात-पिता ने जन्म दे, दिखलाया संसार।
अपने साये में दिया, सबल रूप आकार।।१२।।
दूर किया दुख दर्द को, सहकर सर्व प्रहार।
सुखी संतान के लिए, करता प्रभु मनुहार।।१३।।
अपना सबकुछ भूल कर, बच्चों को दें प्यार।
भटक रहा है वह पिता, रोटी को दो-चार।।१४।।
जिनसे यह पहचान है, वे पूरा संसार।
उसी पिता का अब मने, एक दिवस त्यौहार।।१५।।
बच्चे रमते काम में, करके जिसे किनार।
दिवस पिता का मन रहा, कैसा यह संसार।।१६।।
वृद्धाश्रम है चल रहा, नहीं पिता हैं द्वार।
वैसे बच्चे कर रहे, आज उन्हें सत्कार।।१७।।
यहाँ- वहाँ हैं पल रहे, जिनका था घर-बार।
भूखा हरपल स्नेह का, मिलें आज उपहार।।१८।।
लुढक रहे फुटबॉल सा, मिलता है दुत्कार।
मात-पिता दुर्गति सहे, जब सुत पालनहार।।१९।।
नहीं चुका सकते कभी, पितृ ऋणता का भार।
उम्र वही आती तभी, बदले हर व्यवहार।।२०।।
चरण वंदना कीजिए, खूब दीजिए प्यार।
एक दिवस पाठक तजे, हर-दिन से उद्धार।।२१।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश,
पालीगंज, पटना, बिहार।

जैसे पास हमारे पापा

मेरा क्या सब कुछ तुम से है,
प्राणों से तुम प्यारे पापा।
हिय के अद्भुत सहज सोम तुम,
शीतल चाँद हमारे पापा।
बहुत याद आते हो पापा..

जब भी देखूँ दर्पण मैं तो,
नजर मुझे तुम आते पापा।
अंतर्मन में रोम रोम में,
आकर तुम बस जाते पापा।
बहुत याद आते हो पापा...

जेठ दुपहरी सा जीवन है,
उपवन सा छा जाते पाया।
सीख तुम्हारी लेकर चलती,
पल पल में बस जाते पापा।
बहुत याद आते हो पापा..

इस बसुधा के तिमिर तोम को,
बन सूरज हर जाते पापा।
यादों में मैं बेसुध बैठूँ,
जैसे पास हमारे पापा।
बहुत याद आते हो पापा..

डॉ स्नेहलता द्विवेदी आर्या
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज कटिहार

पिता हीं हैं शान हमारी

पिता हीं है शान हमारी।
है उनसे पहचान हमारी।।
पिता का कर्ज चुकाना है।
बेटा होने का अपना फर्ज निभाना है।।
पिता जी रखते हमारा ख्याल।
होने न देते कोई मलाल।।
पिता एक उम्मीद और आस है।
परिवार की हिम्मत और विश्वास है।।
पिता अपना फर्ज निभाते है।
बच्चे की खुशी की खातिर अपना सुख भूल जाते है।।
मेरा साहस,इज्जत और सम्मान है पिता।
मेरी ताकज,दौलत और मेरी पहचान है पिता।।
घर के सारे बोझ उठाते है।
अपने सारे दु:ख भूल जाते है।।
संस्कार वह हमें सिखलाते।
अच्छे-बुरे का भेद बतलाते।।
पिता हमारी दुनियां के आसमान हैं।
हमारी हर खुशियों के मुस्कान हैं।।
बचपन में उंगलियां पकड़कर चलना सिखाया।
हर मुश्किल से हमें लड़ना सिखाया।।
मेरी गलतियों पर आपकी हर एक डाँट ने मुझे संवारा है।
जीवन के पथ पर आगे बढ़ने में मुझे संभाला है।।

मृत्युंजय कुमार,
नवसृजित प्राथमिक विद्यालय खुटौना यादव टोला
पताही,पूर्वी चंपारण
मो:-9955146027

मेरे पिता

कभी अभिमान हैं तो, कभी अरमान हैं पिता,
कभी धरती हैं तो, कभी आसमान हैं पिता ।
जन्म दिया है , अगर माँ ने हमको,
फिर भी जग में, हमारी पहचान है पिता ।
मेरा साहस, मेरी इज्जत, मेरे तो सम्मान हैं पिता,
मेरी ताकत, मेरी पूँजी, मेरे तो जहान है पिता ।
मुझे हिम्मत देने वाले, मेरे अभिमान है पिता,
यूँ कहें कि, सारे घर की जान हैं पिता ।
जग में जो कुछ भी, पाया है हमने उनसे,
मेरे लिए तो, भगवान के समान हैं पिता।
उनसे ही मेरी, दुनिया सारी है,
दुनिया के सबसे नेक इंसान हैं पिता।

आशीष अम्बर
उत्कमित मध्य विद्यालय धनुषी
प्रखंड – केवटी
जिला – दरभंगा, बिहार

पिता

पितृ दिवस पर आज सभी, करते पितृ को याद।
पाकर आशीष पितृ से,होते खुश औलाद।।
मात-पिता के स्थान का,करता जो नित ध्यान।
बिन पोथी के ज्ञान ही,पाता वो सम्मान।।
रहता जिसके सिर सदा,मात-पिता का हाथ।
होता उस औलाद का, हरपल जग में गाथ।।
पिता से ही रौशन है, बच्चों का संसार।
उनके ही संभार से, पाता वो आकार।।
बाबा बच्चों के लिए, होते अग्नि समान।
रक्षक बन रहते सदा,ताने तीर कमान।।
वंश के रक्षा के लिए, करते हैं हर काम।
कैसे सुत आगे बढे,सोचते सुबह शाम।।
बच्चों की सुख के लिए,तात हैं परेशान।
बच्चों को भी चाहिए,रखना उनका ध्यान।।
होते है माता-पिता, धरती के भगवान।
काव्या कहती है सदा,रखना उनका मान।।

कुमकुम कुमारी "काव्याकृति"
मध्य विद्यालय बाँक,
जमालपुर

मैं पिता बन गया हूँ

छोड़ दी हैं मैंने सारी अठखेलियाँ
क्योंकि अब मैं पिता बन गया हूँ।
अब मैं पिता को नखरे नहीं दिखाता,
क्योंकि अब मैं पिता बन गया हूँ।

छोड़ दी हैं मैंने अब सारी नादानियाँ,
समझने लगा हूं अपनी जिम्मेदारियाँ।
भूल सा गया हूं सारी मनमानियाँ,
क्योंकि अब मैं पिता बन गया हूँ।

अब बच्चों की इच्छा ही मेरा ध्येय हैं
उनकी सारी खुशियाँ ही मेरा श्रेय हैं।
समझने लगा हूं पिता कैसे जीता है ?
क्योंकि अब मैं पिता बन गया हूँ।

आँधी आए या बदन जल रहा हो,
सब कुछ सह कर मैं जी लेता हूँ।
चुपचाप बॉस की डांट पी लेता हूँ,
क्योंकि अब मैं पिता बन गया हूँ।

मुस्कुराता हुआ घर लौटता हूँ
छुपाकर अपनी थकान को।
बच्चों की किलकारियां ही मेरा जीवन है।
क्योंकि अब मैं पिता बन गया हूँ ।

बिंदु अग्रवाल
मध्य विद्यालय गलगलिया
किशनगंज बिहार

रोको! रोते भगवान हैं

मात पिता मेरे पास हैं।
रखते वे मुझसे आस हैं।।
कहते हैं वे ऐसा करो।
सचमुच लांछन से डरो।।

गहराई लेकर बोलते।
शब्दों को वे हैं तोलते।।
अस्सी बसंत अनुमान हैं।
बीते कल के प्रमाण हैं।।

माता-पिता शुभाकाश है।
फैला जिनसे प्रकाश है।।
अनुभव के उनके हाथ हैं।
जो पड़ते मेरे गात है।।

वे हैं अब भी पुचकारते।
अच्छाई को स्वीकारते।।
बाधा कोई जब आ पड़े।
होते सबसे आगे खड़े।।

लगते हैं ऊँच पहाड़-सा।
टलते रहते हैं हादसा।।
जाएँगे धरती छोड़ते।
दयावान सबको जोड़ते ।।

पेड़ बड़ा छायादार है।
शुभ भविष्य का आकार है।।
कुछ वर्षों से नव हो रहा।
घर छोड़ मुसाफिर रो रहा।।

पर यह देखा अब जा रहा।
पुत्र ही खींचकर ला रहा।।
राह अनाथालय जा रही।
दुनिया को आँसू ला रही।।

मजबूरी के हम दास हैं।
ला पाए नहीं सुवास हैं।।
संयुक्त परिवार भार है।
बिखरे रहना संस्कार है।।

किस पर आयद यह दोष है।
किस पर बढ़ता यह रोष है।।
कहते सब तो कुछ हैं यहाँ।
फिरते सब तो जाते वहाँ।।

ये पकड़े रोग असाध्य हैं।
रह गए नहीं आराध्य हैं।।
बढ़ती दुनिया"अनजान"हैं।
रोको!रोते भगवान हैं।।

रामपाल प्रसाद सिंह
प्रभारी प्रधानाध्यापक मध्य विद्यालय
दर्वेभदौर
प्रखंड पंडारक पटना बिहार

पिता

पिता गहरी काली तमस में
बनकर आते हैं प्रकाश।
उनसे जुड़ी हुई है मेरे जीवन की
हर आस।
वह जेठ की भरी दुपहरी में
आते हैं बनकर हवा का झोंका।
मेरी हर गलती में उन्होंने
आकर है हमको टोका।
तपती गर्मी में बारिश की बनकर
आते हैं फुहार।
कभी प्रत्यक्ष रूप से उन्होंने नही
हम पर है लुटाया प्यार।
पिता ठिठुरती ठंड में आते हैं
बनकर अलाव
वह मेरे जीवन के हैं वट वृक्ष
उनसे ही मिलती है छाँव।
पिता मेरे जीवन की रहे थे
प्रथम पाठशाला।
वही लेकर आये मेरे जीवन में
प्रथम निवाला।
पिता मेरे जीवन की हैं
एक अनमोल कहानी।
उनके होने से ही चलती है जीवन में
हमारी मनमानी।

रूचिका
राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय तेनुआ
गुठनी सिवान बिहार

पिता

परमपिता परमेश्वर हैं, हम सब उनकी संतान,
उन्हीं की अनुकम्पा से, हम सब सदा क्रियमाण ।
सबसे पहले परमपिता परमात्मा को प्रणाम,
उन्हें वन्दन, उनका स्तवन, पुण्यप्रद उनके नाम।।

पिता अनुशासन है, पिता उदाहरण है,
पिता ही प्रेरणा है, पिता दुख निवारण है,

पिता अपने संतानों का साहस है,
एक शब्द में कहूँ तुलसी का मानस है।

पिता परिवार का पालक है,
हर परेशानियों का निवारक है,

उनका एक-एक वचन प्रेरक है,
वे गुरु हैं,अच्छे संदेशों का वाहक है,

वे शिक्षा देते, मनुष्य बनकर आये हो,
परिवार, समाज, राष्ट्र के तुम आना काम,

उत्साह, साहस, निष्ठा के साथ दायित्वों का पालन करना,
शुभ और श्रेष्ठ कार्यों में ही बिताना अपनी जिंदगी तमाम ।

अच्छा उस्ताद नहीं, अच्छा शागिर्द हमेशा बने रहना,
जहां से भी हो, अच्छी शिक्षा सदा तुम लेते रहना ।

आत्म-सुधार, आत्म-प्रगति के संग पर-उपकार सदा करना,
अपने शुभ कार्यों से मानव समाज के लिए दृष्टांत बनना।

सभी पिताओं को मेरा प्रणाम,
है प्रेरक उनका वचन, उनका नाम ।

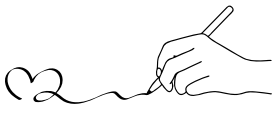

गिरीन्द्र मोहन झा

पिता व्योम के तुल्य हैं

विधा दोहा

पिता व्योम के तुल्य हैं, पिता सृष्टि विस्तार।
जीवन दाता हैं पिता, विटप छाँव भंडार।।

नयन सितारे हैं पिता, श्रेष्ठ सुघड़ करतार।
अपने बच्चों में सदा, भरते शुचि संस्कार।।

पिता बिना लगता सदा, यह सूना संसार।
ये तो पालनहार हैं, यही जीवनाधार।।

कलुषित कर्मों से कभी , करें नहीं अपमान।
इनके नित आशीष से, होता अभ्युत्थान ।।

पिता सृष्टि का मूल है, पिता सुगंधित फूल।
ईश धरा पर हैं पिता, हम चरणों की धूल।।

पिता एक उम्मीद है, पिता शांति सुखसार।
पिता सदा इस विश्व में, संतति का आधार।।

पिता विटप की छाँव है, देता शिशु आराम।
रोटी कपड़ा गेह भी, सुखद सृष्टि आयाम।।

पिता शांति का दूत है, पिता सृष्टि आधार।
पिता सदन की शान है, करते बेड़ा पार।।

देवकांत मिश्र 'दिव्य
मध्य विद्यालय धवलपुरा, सुलतानगंज, भागलपुर, बिहार

Father

Never ever wears a crown
makes us feel like a king
Weaves a world around us
with every possible small thing

Our world just lits up
When someone says
“I know your father
He is a nice man

Do we need God?
when someone in easy flesh
is all over around us
Ever ready to bless

Ashish Kumar Pathak

School -Incharge
Middle school Sarha Dharhara
Munger Bihar

पितृ दिवस

काश मैं भी महसूस कर पाती,
पितृ दिवस मेरे हिस्से कभी न आई।

वो प्यार भरी बातों को,
वो दुलार, वो स्नेह,
काश मैं भी महसूस कर पाती,
पितृ दिवस मेरे हिस्से कभी न आई।

ऊँगली पकड़कर चलना,
माथे पर आशीर्वाद दिए हाथ,
उनकी परछाइयों को कदम से कदम मिलाकर चलना,
उनके प्रेम में वात्सल्य पाना,
काश मैं भी महसूस कर पाती,
पितृ दिवस मेरे हिस्से कभी न आई।

क्या होता है जब सपने तुम देखो और पूरा वो करें,
अच्छे कामों में जो आपके पीठ थपथपाएँ,
जो तुमको बनाने में खुद की हस्ती मिटा दे,
दुःखी होने पर जो हमेशा बोले,
मैं हूँ न
काश मैं भी महसूस कर पाती,
पितृ दिवस मेरे हिस्से कभी न आई।

जो हर वक्त आपका साथ दे,
सहारा दे, आत्मविश्वास बढ़ाए,
आपके हर गलतियों को माफ करें,
काश मैं भी महसूस कर पाती,
पितृ दिवस मेरे हिस्से कभी न आई।

पूजा कुमारी
उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय औरिया रमौती
नवहट्टा सहरसा

गौ माता को हम-सब जानें

बाल कविता

दुग्ध, क्षीर, पय, गोरस लाना।
स्तन्य, पीयूष, दोहज जाना।।
सुधा, सोम हीं सुर को भाए।
देवाहार यही कहलाए।।

जीवनोदक, अमृत भी कहते।
इससे हरपल पोषण गहते।।
दूध गाय है देती हमको।
सदा नीरोग रखती सबको।।

आओ बच्चें गौ को जानें।
क्यों इसको हम माता मानें।।
भला जानवर यह चौपाया।
भद्रा, धेनु सभी को भाया।।

कहते गौरी, सुरभी जिसको।
पयस्विनी, गोंवत्री इसको।।
कहते इसे हैं हिंदुमाता।
मल-मूत्र तक काम है आता।।

होती है यह सीधी-सादी।
गौमाता कहती है दादी।।
कहती सुर-गण बसते इनमें।
दूध, दही, घी, मक्खन जिनमें।।

तरह-तरह की बने मिठाई।
खीर, सेवई सभी बनाई।।
लक्ष्मी जैसी घर में रहती।
नहीं कभी दुख अपनी कहती।।

अनेक नस्लें होती इसकी।
कुछ महँगी कुछ सस्ती
जिसकी।।
रंग बिरंगे रूपों वाली।
लगती है यह बड़ी निराली।।

यही नंदिनी, कामधेनु है।
जिसका पावन चरण रेणु है।।
वेणु बजाकर कृष्ण चराएँ।
तभी गोपाल वे कहलाएँ।।

इसकी सेवा कर जो चलता।
सहज सौम्यता उसमें पलता।।
गौ पालन को कहते सबसे।
सुख मिलता पाठक को इससे।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश
पालीगंज पटना।

गर्मी छुट्टी मना रही हूँ

इतनी है आसान पढ़ाई,
कर लो माते बड़ी भलाई,
संग ककहरा आकर सीखो,
सीखी नहीं त बोलो न।
बचे समय मुख खोलो न।।

जब बैठी हूँ मैं पढ़ने को,
तुम आती मुझको खलने
को,
जोर-जोर खर्राटे लेती,
हमसे हटकर सो लो न।
बचे समय मुख खोलो न।।

काम बहुत है तेरे ऊपर,
एहसान है मेरे ऊपर,
गर्मी छुट्टी मना रही हूँ,
तुम सह मेरे डोलो न।
बचे समय मुख खोलो न।

तेरा अच्छा नहीं जमाना,
लड़की को था नहीं पढ़ाना,
जैसे-तैसे कुछ पढ़ लेती,
तुम सह मेरे होलो न।
बचे समय मुख खोलो न।।

ज्यादा मत पर साक्षर होले,
लगे माथ पर लांछन धो लें,
हस्ताक्षर ही करना सीखो,
बोली मीठी घोलो न।
बचे समय मुख खोलो न।।

इंटरनेट जमाना आया,
शिक्षा का सब पर है साया,
अनपढ़ अब न रहेगी माई,
अपने युग से तोलो न।
बचे समय मुख खोलो न।।

रामपाल प्रसाद सिंह अनजान
प्रभारी प्रधानाध्यापक
मध्य विद्यालय दरवेभदौर
पंडारक पटना बिहार

कोयल

कोयल भोली भाली है,
बोली बहुत निराली है।
श्याम सलोनी प्यारी है,
धुन तेरी मतवाली है।

तेरी बोली सुनने को,
मन अधीर हो जाता है।
नही सुनूँ जो तुमको तो,
लगता खाली खाली है।

श्रव्य दृश्य के अंतर को
खूब तो तुम समझाती हो।
बोली से दिल में उतरी,
सबको बहुत रिझाती हो।

कौवा भी को काला लेकिन,
बोली बहुत डराता है।
तू कोयल मन मीत हुई,
बोली मुझे सिखलाती है।

जीवन के अनुपम सूत्र को,
कोयल तुम बतलाती है।
सुंदर बोली ही वो धन है,
जीवन सफल बनाती है।

डॉ स्नेहलता द्विवेदी 'आर्या'
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज
कटिहार

उमड़- घुमड़ कर बरसो बादल

केवल बादल नहीं बरसात भी हो ,
प्रचंड गर्मी पर आघात भी हो ।
कुछ हवा चले खूब पानी हो ,
इसमें हम बच्चों की मनमानी हो ।

हर खेत में तुम्हें पानी देना है ,
न तनिक भी मनमानी करना है ।
सब तेरे राह ही देख रहे ,
अब जल से हर खेत भी भरना है ।

गर्मी है इतनी अखंड प्रचंड ,
मानो शोला आसमान से बरस रहे ।
सुबहो शाम पड़ती इतनी गर्मी , ,
सब पेड़ पौधे भी झुलस रहे ।

सब जीवों की पीड़ा बढ़ी हुई ,
मानव भी इसमें शामिल है ।
उस मानव में हम बच्चे भी ,
स्वदेश के लिए बड़े कामिल हैं ।

हम बच्चे बड़े सयाने हैं ,
पर नयनों से पीड़ा झलक रही ।
दया दृष्टि भी तनिक इधर दे दो ,
हर दृष्टि हमारी फलक रही ।

पत्ते हरे रोज मुरझाते हैं ,
यह बात हमें तड़पाते हैं ।
तपती है धरती तवा समान ,
मानो मौसम भी आग लगाते हैं ।

सब तेरे ही आस लगाए हैं ,
गर्मी से सभी सताए हैं ।
बादल तू अब जरा देर न कर ,
तुम्हें अपने नयनों में ही समाए हैं।

उमड़ घुमड़ कर बरसो बादल ,
धरती की प्यास बुझाओ न ।
सब जीव तड़पते तुम्हारे बिना ही ,
जीवों में आस जगाओ न ।

झमाझम बरसो तुम पानी बनकर ,
आओ बादल तू जल लेकर ।
किसानों के चेहरे मुरझाए हुए ,
तुम बन अमृत उन्हें जल देकर ।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा, जिला मुजफ्फरपुर

मौसम गर्मी वाला आया

चौपाई छंद

बिटिया रानी सुनो कहानी।
दुनिया करती है नादानी।।
कभी न करना तुम मनमानी।
जिससे बढ़े कुछ परेशानी।।

मौसम गर्मी वाला आया।
लू का संग थपेड़ा लाया।।
निदाघ, ऊष्मा यहाँ बढ़ाया।
ताप सहन कर बदन न पाया।।

वारि, नीर, जीवन कहलाते।
जिनको पीकर जान बचाते।।
मेघपुष्प, तोय, अंबु, भाते।
उदक, सलिल तन अंदर जाते।।

पीते जब अधिकाधिक पानी।
शीतल मन फिर कहे कहानी।।
बिना पिए न बचेगी रानी।
संचय इसका करना जानी।।

व्यर्थ इसे तुम नहीं गँवाना।
औरों को भी यह समझाना।।
जितना संभव नीर बचाना।
उससे बढ़कर पेड़ लगाना।।

ज्यादा पानी, हल्का खाना।
दही, छाछ, मट्ठा को पीना।।
पानी वाले फल को खाना।
सदा धूप से बदन बचाना।।

बिटिया रानी खुश हो बोली।
कानों में फिर मिस्री घोली।।
मटके का पानी जो पीली।
दौड़ी अपने गले कर गिली।।

लू से तन को सदा बचाऊँ।
पढ़ने में मन खूब लगाऊँ।
आगे हरपल बढ़ूँ- बढ़ाऊँ।
जीवन अपना सफल बनाऊँ।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश,
पालीगंज, पटना, बिहार।

पुस्तक है हम सबका साथी

पुस्तक है हम सबका साथी ,
ज्ञान विज्ञान की है यह बाती ।
नया सवेरा हमें है लाना ,
पुस्तक से नित ज्ञान है पाना ।
यह जीवन में खुशियाली लाए ,
नया नया यह ज्ञान सिखाए ।
खेलें कूदें , मस्ती कर लें ,
पुस्तकों से हम दोस्ती भी कर लें ।
यह दोस्ती सुंदर सपने सजाए ,
नवल धवल यह रूप दिखाए ।
जीवन को यह ज्ञान से भर दे ,
अज्ञानता को यह बिल्कुल हर ले ।
स्वर्ग वहाँ ; जहाँ पुस्तक होती ,
कभी नहीं यह विपदा बोती ।
सारे पुस्तक ज्ञान के सागर ,
यह थोड़े में ही भरता गागर ।
हर पुस्तक से कुछ ज्ञान ही पाते ,
ये जीवन में बड़े काम हैं आते ।
अच्छी पुस्तक पढ़ें पढ़ाएँ ,
इसे पढ़कर नित ज्ञान बढ़ाएँ ।
यह सुख , संपदा हमेशा घोले ,
फिर जीवन कभी विपदा नहीं तोले ।
यह उचित अनुचित का ज्ञान कराए ,
सदा हम सबका अज्ञान मिटाए ।
पुस्तक पढ़ने बैठ जब जाते ,
सब कुछ जीवन में मंगल ही पाते ।
पुस्तक को हम सब गले लगाएँ
मम्मी पापा यही रोज बताएँ ।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा, जिला मुजफ्फरपुर

शब्दों के हैं रूप निराले

चौपाई छंद

यूँ जो ध्वनियाँ बोली जाती।
भावों को अपने बतलाती।।
वर्णों से जो निर्मित होती।
है शब्द वही तो कहलाती।।

शब्दों के है रूप निराले।
इनके शिल्पी बुनते जाले।।
कटु-मधु रस भावों में ढाले।
प्रयोग अर्थ विविध मतवाले।।

आओ जाने इसको ऐसे।
भेद सभी है इसमें वैसे।।
भाषाविद गढ़ते हैं जैसे।
सही आधार रखते कैसे।।

अर्थानुसार दो भेद बने।
सार्थक और निरर्थक कहने।।
प्रयोग में भी दो रूप जने।
अविकारी संग विकारी ने।।

रूप बदलकर बना विकारी।
पुत्रों की है महिमा न्यारी।।
संज्ञा, सर्वनाम कहें विचारी।
क्रिया, विशेषण सबसे भारी।।

पिता चार का अविकारी है।
क्रिया-विशेषण अति न्यारी है।।
संबंध, समुच्चय सुखकारी है।
विस्मयादि से चित हारी है।।

तत्सम, तद्भव दो दीवाने।
देशज और विदेशज जाने।।
भेद उत्पत्ति लिए बहाने।
भाषा समृद्ध लगे बनाने।।

कहें व्युत्पत्ति, रचना बोलें।
तीन भेद की गुत्थी खोलें।।
योगरूढ़, यौगिक, रूढ़ चलें।
इनमें हीं सारे शब्द पलें।।

आगे मिलने जब आएंगे।
सविस्तार सब सिखलाएंगे।।
कठिनाई जो भी पाएंगे।
पाठक अब सरल बनाएंगे।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश,
पालीगंज, पटना, बिहार।

शब्द भेद की व्यापकता

अक्षर- अक्षर से बनते शब्द ,
मैं उस शब्द के भेद बताने आया हूँ ।
उस भेद में रहते कैसे शब्द ,
जरा मै उसे सिखाने आया हूँ ।
उत्पत्ति के आधार पर प्रथमतः ,
शब्दों के भेद बताता हूँ ।
तत्सम , तद्भव , देशज , विदेशी ,
उनके सौरभ सकल लखाता हूँ ।
आए जो संस्कृत से सीधे शब्द ,
वे तत्सम रूप कहलाते हैं ।
अग्नि और सूर्य आदि को
तत्सम शब्द में गिने जाते हैं ।
ऐसे शब्द तद्भव के होते ,
जो संस्कृत से निकलकर आते हैं ।
पर रूप उनके कुछ बदले हुए ,
यथा सूरज ,आग लखाते हैं ।
तीसरे रूप देशज होते ,
जो देसी भाषा से निकल कर आते हैं ।
लोटा , पगड़ी आदि शब्द अनेक ,
जो देशज रूप बन छाते हैं ।
विदेशी शब्द वैसे जो हिल मिलकर ,
साथ हिंदी में समाते हैं ।
ये हिंदी के प्रतिरूप बनते ,
स्कूल , डॉक्टर शब्द आदि
हिंदी में हिल मिल जाते हैं ।

इन चार प्रकार के शब्दों को
उत्पत्ति के अनुसार बताया हूँ ।
ध्यान रखना सदा जरूरी है ,
यह आगे की राह सिखाया हूँ ।
अब बात करें रचना प्रकार से ,
इसमें तीन भेद बताते हैं ।
रूढ़ , यौगिक , योगरूढ़ को
यथा शब्दों के साथ समझाते हैं ।
रूढ़ रचना का प्रथम भेद है ,
जिसे खंडित करने पर न कोई अर्थ मिले ।
यथा हाथ , पानी , दाल आदि का
केवल सीधा सीधा अर्थ खिले ।
यौगिक शब्द वह रचना के प्रकार का ,
जिसे खंडित करने पर भी अर्थ मिले ।
सूर्योदय , पुस्तकालय आदि शब्द भी ,
बिना अर्थ दिए यह कभी न हिले ।
योगरूढ़ वह शब्द है प्यारे ,
जो यौगिक तो है पर रूढ़ रूप बन जाता है ।
यथा पंकज , जलज शब्द ऐसे हैं ,
जो विशेष अर्थ को पाता है ।
इस तरह शब्द के भेद हुए ,
और आगे भी समझाना है ।
हर शब्द की अपनी गरिमा है ,
और आगे भी बहुत बताना है ।

अमरनाथ त्रिवेदी
पूर्व प्रधानाध्यापक
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

शब्द भेद को जानें

देववाणी सुता है हिंदी।
भारत माता की है बिंदी।।
आओ इसका रूप निहारे।
बहती जिसमें भाव हमारे।।

कुछ के सीधे अर्थ समझते।
कुछ अटपट सा समझ न पाते।।
मिलता अर्थ वह सार्थक रहे।
अर्थहीन को निरर्थक कहे।।

दोनों कुछ तो भाव जगाते।
बोली में हैं बोले जाते।।
भाषा सार्थक को हीं माने।
नहीं निरर्थक को पहचाने।।

तत्सम है संस्कृत के जैसा।
अग्नि, धर्म आदि है वैसा।।
रूप बदल संस्कृत की आयी।
आग, धरम तद्भव कहलायी।।

जूता, लोटा, कटरा, खिरकी।
सीमा के अंदर भारत की।।
जो जन्मी देशज कहलायी।
बोलचाल में सबको भायी।।

मुफ्त, कार, औरत, आवारा।
शब्द विदेशी बना हमारा।।
रची बसी सबका मन भायी।
वही विदेशज है कहलायी।।

लिंग, वचन, कारक के चलते।
कुछ शब्दों के रूप बदलते।।
रूप बदलता वही विकारी।
नाम बताती संज्ञा सारी।।

संज्ञा के बदले जो आए।
सर्वनाम उसको कह पाए।।
गुण-अवगुण जो धर्म बताए।
वह शब्द विशेषण कहलाए।।

काम बोध है क्रिया कराती।
यही विकारी है कहलाती।।
लिंग, वचन, कारक के रहते ।
कुछ सर्वत्र समरूप मिलते।।

रूप शेष का बदल न पाए।
अविकारी सारा कहलाए।।
टुकड़े जिसके अर्थ न देते।
कान, पकड़, रूढ़ की लेते।।

दो सार्थक शब्दों का जुड़ना।
यौगिक रूप सभी को पढ़ना।।
जुड़कर जो अर्थ बदल देता।
वही रूप योगरूढ़ लेता।।

हिंदी सबसे मिलकर रहती।
सज-धजकर भावों को कहती।।
ममता, करुणा भाव जगाए।
मातृभाषा तभी कहलाए।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज
पटना।

शब्द भेद की सार्थकता

शब्द में कितनी शक्ति छिपी है,
हम इस बात को जरा जानें।
एक समय बच्चा को कहें बउआ ,
उसी बच्चे को फिर उल्लू कहकर पहचानें।

दोनों शब्द आपके ही मुख से निकले ,
पर दोनों में बहुत भारी अंतर !
प्रथम शब्द से जो खुशी मिली थी ,
दूसरे शब्द से हुई खुशी छूमंतर।

है शब्द ब्रह्म ; अक्षर अविनाशी ,
इसे निज मन में भी धर लें।
किन शब्दों का प्रयोग कहाँ करेंगे ,
यह सद्विचार निज मन कर लें।

अब जानें शब्द के भेद रूप को ,
कुछ आगे का भी ज्ञान करें ।
सार्थक और निरर्थक शब्द को ,
एक एक कर पहचान करें।

सार्थक शब्द वे होते हैं ,
जिनके अर्थ हमेशा होते।
जुड़े होते युक्तिसंगत क्रम में ,
न कभी भाव कहीं भी खोते।

अमर , भलाई , चंदन ,कंबल में ,
युक्तिसंगत अक्षर क्रम में दिखते।
ऐसे ही शब्दों को हमेशा ,
सार्थक शब्द हैं कहते।

निरर्थक शब्द कहलाते हैं वे ,
जिनका कभी कोई अर्थ नहीं होता।
वैसे शब्द में युक्तिसंगत क्रम नहीं होता ,
न भाव ही कहीं अपना बोता।

यथा नकर , उपके , चलेमी शब्द से ,
कोई अर्थ निकल नहीं पाता।
ऐसे ही शब्द निरर्थक कहलाते ,
इनमें भाव तनिक भी नहीं आता।

संज्ञा , सर्वनाम ,विशेषण , क्रिया शब्द में ,
लिंग , वचन के अनुसार परिवर्तन होते।
यही शब्द विकारी कहलाते ,
हैं यथास्थान जो रूप निज के खोते।

वे शब्द अविकारी कहलाते ,
जिनमें किसी हालत में बदलाव न होते।
वाक्य प्रयोग करते समय कभी भी ,
निज स्वरूप कभी न खोते।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा जिला मुजफ्फरपुर

वर्षा रानी

वर्षा रानी , वर्षा रानी,
तुम हो नटखट बड़ी सयानी ।
कहाँ – कहाँ से तुम लातीं,
ढेर – ढेर सा पानी ।

सूखी – प्यासी धरती की,
तुम ही हो जिंदगानी ।
खेतों – खलिहानों में लाती,
तुम भरपूर जवानी ।

वर्षा रानी , वर्षा रानी ,
तुम हो नटखट बड़ी सयानी ।
तुम्हें जन्म देने वाले,
नभ में रहते काले बादल ।

स्याह – स्लेटी – नीला – पीला,
फैलाते हैं आँचल ।
ताल – तलैया भर जातीं,
तुम जो लातीं पानी।

रिमझिम – रिमझिम बूँदों से,
तुम करतीं बौछार ।
दादुर – मोर – पपीहा सब,
तुमसे करते प्यार ।

तुम जग को जीवन देतीं,
खुद करके कुर्बानी ।
वर्षा रानी , वर्षा रानी,
तुम हो नटखट बड़ी सयानी ।

आशीष अम्बर
उत्क्रमित मध्य विद्यालय धनुषी
प्रखंड – केवटी
जिला – दरभंगा
बिहार

क्यों नहीं बरसता पानी

रोज तो घिरते है
काले – काले बादल
पर नहीं बरसते
न आती है आँधी
न उड़ते हैं धुल – धक्कड़
न चमकती हैं बिजलियाँ
न गरज – गरज बरसता है पानी
न गाता कोई मेघ – मल्हार
न बूढी दादी गाती है बरसाती
न बच्चे कहते हैं अब
एक मुठ्ठी सरसों,पिट – पिट बरसो
न घुमते हैं पाँच पंच घर – घर
न फेंके जाते हैं उनपर पानी
न भौजाई छींटती है पानी
अपने देवरों पर
न नहाता है कोई आधी रात को
कोई तैयारी नहीं
बरसात को बुलाने की
मोबाईल और टीवी पर
सुनकर अधकचरे समाचार
आज भारी वर्षा की आशंका है
सभी निश्चिंत हो जाते हैं
कैसे आये बिना स्वागत बरसात?
रिमझिम – रिमझिम बरसे पानी
बदल चुके हैं
सारे नियम और कहानी
लोग पूछते हैं
क्यों नहीं बरसता पानी ?

शैलेन्द्र भूषण
न.प्रा.वि.पकडिया भूमिहारी टोला
हरसिद्धि , पूर्वी चम्पारण

पहली बूँद धरा पर आई

विधा गीत

अस्त- व्यस्त हो चुके सभी अब, धूलकणों ने ली जम्हाई।
पहली बूँद धरा पर आई, बजती जैसे हो शहनाई।।

व्यथित सभी थें गहन ताप से, नहीं चैन का नाम कहीं था।
ताल, तलैया, पनघट, सूखे, हरियाली का नाम नहीं था।।
जब बूँदों का स्पर्श हुआ तो, लगी धरा जैसे शर्माई।
पहली बूँद धरा पर आई, बजती जैसे हो शहनाई।।०१।।

झुलस गए थें पत्ते सारे, उपवन सूना सा लगता था।
दूर जहाँ तक नजरें जाती, सूखा-सूखा हीं मिलता था।।
बूँदों से जब मिलन हुआ तो, सारी कलियाँ अब मुस्काई।
पहली बूँद धरा पर आई, बजती जैसे हो शहनाई।।०२।।

नर्मी आयी वायु ताप में, चैन सभी को अब आया है।
पावस का करके आलिंगन, तरुवर का मन हर्षाया है।।
तरुवर सारे झूम उठे हैं, लौटी जैसे हो तरुणाई।
पहली बूँद धरा पर आई, बजती जैसे हो शहनाई।।०३।।

मोर, पपीहे नाच रहें हैं, संगी-साथी भी मुस्काते।
खेतों का भी रंग बदलने, हर्षित हो किसान हैं जाते।।
लिए चेहरे पर खुशहाली को, सबकी आँखें हैं भर आई।
पहली बूँद धरा पर आई, बजती जैसे हो शहनाई।।०४।।

जिसपर सुख-दुख सब निर्भर है, उसकी करने को अगुआई।
स्वागत करते हम पावस का, जैसे दुल्हन हो घर आई।।
नव उमंग उत्साह नया है, चहक उठी फिर से अमराई।
पहली बूँद धरा पर आई, बजती जैसे हो शहनाई।।०५।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश, पालीगंज,
पटना, बिहार।

भारत देश हमारा है

यह भारत देश हमारा है।
सब देशों से प्यारा है।।

हिंदु, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई।
मिल-जुलकर रहते हम सब भाई।।

दिल्ली है इसकी राजधानी।
बड़ी खुबसूरत है इसकी अगवानी।।

राष्ट्रपिता का समाधि स्थल है जहाँ।
राजघाट है वह पावन जगह वहाँ।।

लाल किला है देश की शान।
आजादी की है पहचान। ।

आगरा में चलकर ताजमहल का दीदार करो।
शाहजहां-मुमताज महल की अमर प्रेम कहानी का ध्यान धरो।।

सभी धर्मों का सम्मान यहाँ है।
एक दूसरे के दिलों का बसता अरमान जहाँ है।।

आओ हम सब मिलकर गाएँ।
अपने देश का मान बढ़ाएँ।।

हम भारत के निवासी है।
इस देश में कितने प्रवासी है।।

हिमालय से निकली गंगा हिंद महासागर में मिल जाती है।
भारत देश में गंगा पवित्र नदियों के रूप में पूजी जाती है।।

देश की खातिर न्योछावर अपनी जान।
नही कम होने देंगे इसकी शान।।

मृत्युंजय कुमार
नवसृजित प्राथमिक विद्यालय खुटौना
यादव टोला
पताही,पूर्वी चंपारण
मो:-9955146027

पिता समान कोई नहीं जग में

पिता शक्ति है ; पिता भक्ति है ,
पिता ही जीवन का आधार है ।
पिता से बढ़कर कुछ भी नहीं ,
वह सब संबंधों का आगार है ।।

पिता बोलते कम हैं घर पर ,
पर सब करके वही दिखाते ।
यही उनमें खूबी बहुत ,
हैं वही घर द्वार सजाते ।।

माता की सिंदूर , बिंदी वे ,
उनके जीवन के प्राणाधार हैं ।
घर के सारे स्तंभ की सूरत ,
वही घर के सर्वाधार हैं ।।

पिता ही लाज , इज्जत , पगड़ी हैं ,
कोई पिता समान न दूजा ।
वे ही घर को स्वर्ग बनाते ,
सदा दिल से करो उनकी पूजा ।।

पिता ही घर के आन बान ,
और पिता ही हमारे विधाता ।
पिता सम नहीं कोई दुनिया में,
वही इस घर के भी निर्माता ।।

पिता हैं तब मुख की भी वाणी ,
पिता ही घर के नायक ।
पिता से ही हम सब कुछ बनते ,
सुख दुःख में वही सहायक ।।

घर में सब हों पर पिता नहीं तो ,
फिर कैसा घर है लगता !
उनके बिना यह घर कैसा ,
सारा संसार भी सूना दिखता !।

उनके मान सम्मान की रक्षा में ,
हम तन मन से जुट जाएँ ।
यही हमारे सबल पक्ष हैं ,
हमे यही कर्त्तव्य सिखाएँ।।

पिता के प्रतिरूप होते है बच्चे ,
क्या उनके बिना वंश बढ़ेगा ?
वहीं हैं घर के असली स्वामी ,
क्या उनके बिना कोई शीर्ष चढ़ेगा ?

मैं खुश हूँ बहुत पिता हैं घर में ,
वे मेरे जीवन भाग्य विधाता ।
शौक भी वही पूरे करते हैं ,
जो हर संभव हो पाता ।।

पिता ही खुशियों के हैं खजाने ,
पिता ही जीवन के भी नायक ।
पिता ही हमारे सपनों के प्रदाता ,
न कोई उनके समान सहायक ।।

पिता हैं तो घर की इज्जत भी ,
पिता ही सब आस हमारे।
पिता वचन से कभी मुख न मोड़ें ,
हैं यही घर के चाँद सितारे ।।

पिता की बात जो भी करूँ ,
सब वह छोटी पड़ती जाए ।
उनके समान जग में कोई नहीं ,
जो बच्चों पर सर्वस्व लुटाए ।।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

देशी खाना

छोड़ो बच्चों स्प्राइट माजा,
आम लाओ मीठा व ताजा।
पिज़्ज़ा-बर्गर-नूडल त्यागो,
खाओ खूब रोटी और दाल।।

जो खाते हैं मैगी-तंदूरी,
तली चपाती, पानी-पुरी।
जवानी में ही दादा जैसे,
चिपक जाते हैं उनके गाल।।

कुरकुरे-बिस्किट जो खाते,
पेट पकड़ कर रोज पछताते।
हो जाती है डॉक्टर से यारी,
बुरा हो जाता है उनका हाल।।

बाजरे और मकई का घट्ठा,
खाकर लोग बनते थे पट्ठा।
दोस्तों संग मिट्टी लगाकर,
अखाड़े में ठोकते थे ताल।।

जैनेन्द्र प्रसाद 'रवि'
म.वि. बख्तियारपुर, पटना

योग जरूरी है

हाँ ! योग जरूरी है।
तन-मन और मस्तिष्क को,
स्वस्थ रखने के लिए।
शारीरिक विकास के लिए।
बढ़ते विषाद के लिए।

तड़के उठ जाना,
खुली हवा में जाकर,
हाथ- पैर फैलाना।
साँस लेना और,
साँस छोड़ना,और,
न जाने क्या – क्या।

पर योग सिर्फ यही नहीं,
योग और भी है....।
हाँ ! अपनी आँखों को,
खूबसूरत बनाने का योग,
किसी में बेवजह बुराई,
न देखे हम...।
अपनी वाणी को,
स्वच्छ और मधुर,
रखने का योग,
किसी की भावनाओं को,
हमारी वाणी से ठेस,
न पहुँचे,
किसी के जज़्बात आहत न हो।

अपने विचारों को भी,
हम निर्मल और पवित्र रखें।
यदि किसी का,
भला न सोच सकें तो,
बुरा भी न सोचें,
दूसरों को सही रास्ता दिखाएं।

अपने व्यवहार में,
शालीनता लाकर हम,
योग दिवस को सफल बनाएं।
जब भी किसी से मिले तो अपनी,
सभ्यता की छाप छोड़ जाएं।

अपने मन,वचन,विचार,
कर्म और व्यवहार में,
नियंत्रण रख हम,
विश्व योग दिवस को,
सफल बनाएं।
आओ हम सब मिल कर,
जीवन में योग अपनाएँ।

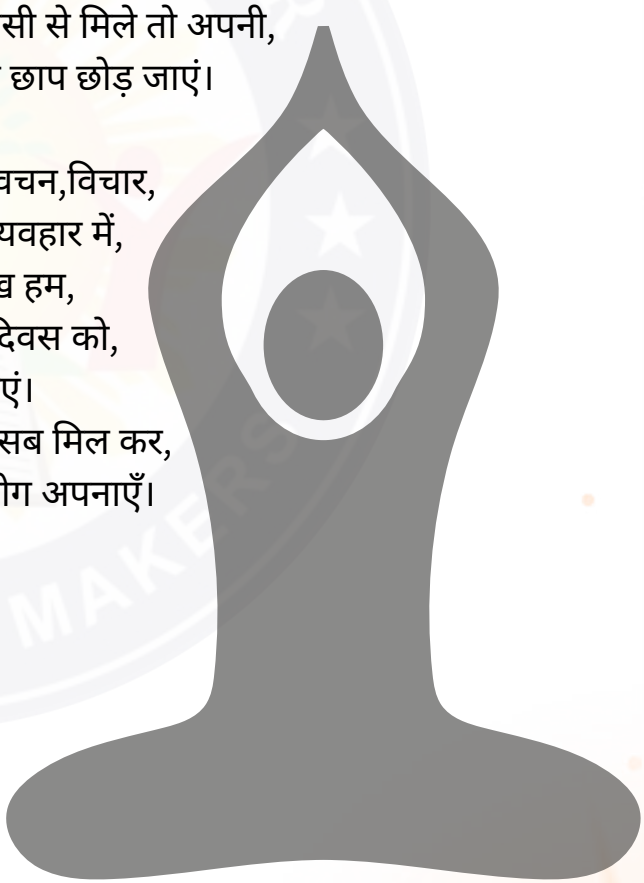

बिंदु अग्रवाल
मध्य विद्यालय
गलगलिया,किशनगंज बिहार

योग

योग का अर्थ है जुड़ना,
एकाग्रता, निरन्तर अभ्यास।
कर्म-कुशलता, समत्व,
दु:खसंयोग-वियोग का प्रयास।।
भक्तियोग, ज्ञानयोग, राजयोग,
कर्मयोग इनके चार प्रकार।
योग का चरम व अंतिम उद्देश्य है,
परमात्मा से हो एकाकार।।
यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार,
धारणा, ध्यान, समाधि योग के अष्ट-अंग।
प्रात: काल जगकर कुछ काल जब हो आसन-प्राणायाम,
सुदृढ़ होते अंग-प्रत्यंग।।
यौगिक मुद्राओं का भी है,
भारतीय योग-पद्धति में विशेष स्थान।
मुद्रा में पंचतत्वों की प्रधानता,
आसन में रक्त-संचरण है प्रधान।।
प्राणायाम में प्राणवायु यानि आक्सीजन का है मुख्य स्थान।
प्रात: अथवा सायं जब कुछ समय हम करते हैं ध्यान।।
बढती है एकाग्रता,
मन-मस्तिष्क पूर्णत: होता शांत,
प्रात: काल कुछ समय जब हो योगाभ्यास।
बढ़ती है क्षमता, ऊर्जा, हर ओर होता विकास।।
योगाभ्यास से पूर्व जल का पान,
पश्चात् हो मूत्र का त्याग।
सारे कीटाणु शरीर से बाहर होते,
ऊर्जा की जलती आग।।
योग का माहात्म्य है विशाल,
लौकिक-अलौकिक हो कल्याण।
निस्संदेह योग है भारतवर्ष का विश्व को एक महान वरदान।।

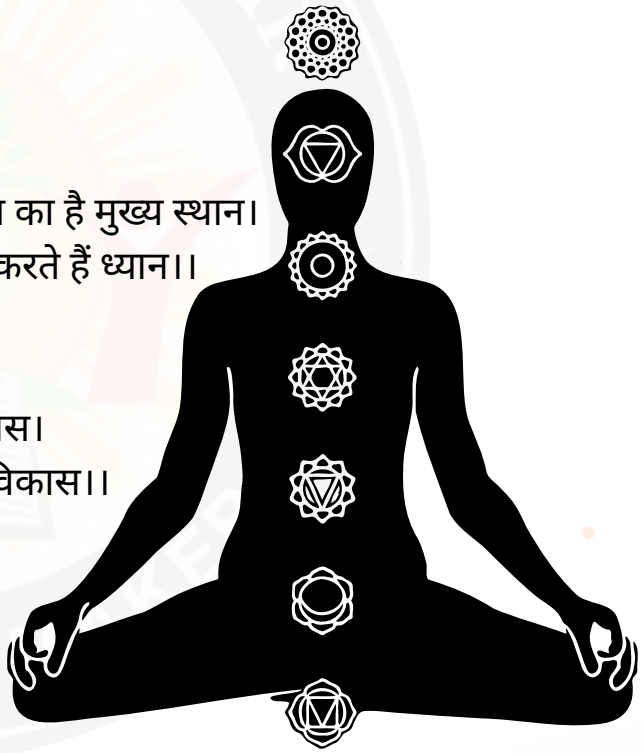

गिरीन्द्र मोहन झा,
+२ भागीरथ उच्च विद्यालय,
चैनपुर-पड़री, सहरसा

योग भगाए रोग

नित्य जो करता मानव योग।
रहे जीवन में सदा नीरोग ।।
ऋषि – मुनियों ने किया प्रतिपादित।
करे जो योग, सदा रहे आह्लादित ।।
चुस्ती – फुर्ती वह दिखलाए।
आलस उसके पास न आए।।
जिसने भी अपनाया योग।
केवल यह नही है संयोग ।।

मन शांति का मार्गदर्शक योग।
बीमारियों का विनाशक योग ।।
सुखी जीवन का है आधार।
इसकी महिमा है अपरम्पार ।।

संसार ने भी इसकी महिमा जाना।
इसके गुणों को उन्होंने पहचाना ।।
भारत वर्ष ने यह संदेशा लाया।
योग के गुणों को चहुँओर बखाया ।।

आशीष अम्बर
उक्रमित मध्य विद्यालय धनुषी
प्रखंड – केवटी
जिला – दरभंगा
बिहार

करें योग रहें नीरोग

आओ हम सब योग करें।
जीवन को नीरोग करें।।

सुबह सवेरे उठकर जो करते हैं योग।
बिमारी दूर भागती है और वो सदा रहते हैं नीरोग।।

स्वस्थ जीवन जीना है तो रोज योग अपनाएँ।
रोज योग अपनाकर जीवन रोगमुक्त पाएँ।।

शरीर को रोगमुक्त बनाना है।
जीवन में नित्य योग को अपनाना है।।

आओ हम सब योग अपनाएँ।
स्वस्थ शरीर के साथ जीवन धन्य बनाएँ।।

जीवन में जो योग अपनाता है।
अपने आस-पास से बीमारी दूर भगाता है।।

योग के आगे सब है फेल।
डॉक्टर हो या वैद्य किसी का नही है कोई मेल।।

स्वस्थ और फुर्तीला शरीर पाना है।
तो जीवन में सदा योग अपनाना है।।

आईए हम सब मिलकर योग दिवस पर संकल्प लें।
खुद योग अपनाएं और दूसरों को भी विकल्प दें।।

मृत्युंजय कुमार
नवसृजित प्राथमिक विद्यालय
खुटौना यादव टोला
पताही,पूर्वी चंपारण

योग सौम्य संजीवनी

दोहावली

योग गणित का अंश है, यही खोज पहचान।।
दिव्य मिलन परमात्म का, सुंदर शुभ अवदान।।०१

नियमित योगाभ्यास से, मिलती मन को शांति।
बढ़ती है एकाग्रता, तन की निखरे कांति।।०२

योग हमारा लक्ष्य हो, करें हृदय स्वीकार।
मित्र बनाएँ शीघ्र ही, यही जीवनाधार।।०३

मन के पीछे भाव की, करिए नित अनुभूति।
कुंडलिनी गति योग से, करिए दृढ़ आकूति।।०४

रखना है यदि देह को, स्वस्थ चारु मजबूत।
निर्मल पावन योग के, बनें सर्वदा दूत।।०५

मन में पावन भाव रख, करिए नियमित योग।
सौम्य सुधा जीवन यही, दूर भगाए रोग ।।०६

योग सौम्य संजीवनी, नित्य पीजिए आप।
देह बुद्धि को स्वस्थ रख, छोड़ें अपनी छाप।।०७

देह लचीली हो सदा, क्रिया भावना योग।
वजन घटाकर देह का, रखिए नित नीरोग।।०८

देखो करके योग को, मिट जाएँ सब रोग।
अद्भुत ताकत गुण छुपे, कहते हैं सब लोग।।०९

देवकांत मिश्र 'दिव्य'
मध्य विद्यालय धवलपुरा,
सुलतानगंज, भागलपुर, बिहार

योग दिवस

जुड़ने को योग कहते,
तन-मन जुड़े ब्रम्ह से।
स्वस्थ तन हो, स्वस्थ मन हो,
प्रकृति के प्रण से।।

यह यो है विश्वास सबका,
योग जीवन का।
है यह अमृत प्राण रस,
नित मान जीवन का।।

प्राणायाम अद्भुत प्राण वायु के,
नियंत्रण का।
कर लिया स्वयं – प्रभा के,
आत्मशोधन का।।

ध्यान आसान और विग्रह,
सिक्त प्रतिपल का।
मिट गया विकार तन मन,
और जीवन का।।

योग भारत की विधा है,
विश्व के बस का।
योग दिवस के संग समर्पित,
है नमन सबका।।

डॉ स्नेहलता दिवेदी 'आर्या'
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय
शरीफगंज कटिहार

आओ कर लें योग

सरसी छंद गीत

जीवन है अनमोल मनुज का, मिले विविध संयोग।
रहना है नीरोग हमें तो, आओ कर लें योग ।।

गीता में श्रीकृष्ण कहें हैं, कर्म, भक्ति सह ज्ञान।
सुख के तीनों मूल यही है, करता मोक्ष प्रदान।।
गीता की मिली अमृतवाणी, खुदपर करें प्रयोग।
रहना है नीरोग हमें तो, आओ कर लें योग।।०१।।

प्रमाण दे रही शिवसंहिता, गोरक्षशतक चार।
मंत्र, राज, हठ, लय सदा यही, बदल सका व्यवहार।।
राजयोग सब मान रहे हैं, दूर करे हर रोग।
रहना है नीरोग हमें तो, आओ कर लें योग ।।०२।।

दिए पतंजलि योग ज्ञान है, आठ बताकर रूप।
राजयोग के सूत्र सभी हैं, लगते बड़े अनूप।।
व्यापक जन-जन में हुआ यही, जिससे हो नीरोग।
रहना है नीरोग हमें तो, आओ कर लें योग ।।०३।।

प्राणायाम, नियम, आसन है, समाधि, प्रत्याहार।
ध्यान, धारणा, यम आठों से, करिए जीवन पार।।

औपचारिक योग दर्शन को, आज समझते लोग।
रहना है नीरोग हमें तो, आओ कर लें योग ।।०४।।

कायिक, वाचिक, मनसा सबका, करें सरल संचार।
आत्मा, परमात्मा दोनों का, बने मिलन आधार।।
पाठक तन-मन सदा साधते, जीवन सुख को भोग।
रहना है नीरोग हमें तो, आओ कर लें योग ।।०५।।

योग दिवस हम मना रहे हैं, मिली अलग पहचान।
एक मंच पर विश्व आज है, देते हम हैं ज्ञान।
भारत की अगुआई में है, बना एक उद्योग।
रहना है नीरोग हमें तो, आओ कर लें योग।।०६।।

तन-मन का दोष मिटाना है, बहुत जरूरी काज।
बात-बात पर होते रहते, यहाँ सभी नाराज।।
पाठक विनती करते रहते, रखिए दूर वियोग।
रहना है नीरोग हमें तो, आओ कर लें योग।।०७।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश, पालीगंज, पटना,
बिहार।

जोड़ें नाता योग से

मनहरण घनाक्षरी छंद

स्वस्थ रहने के लिए,
चैन से जीने के लिए,
जीवन में सभी लोग, जोड़ें नाता योग से।
ऋषियों का है कहना,
निरोगी जो है रहना,
रोज कसरत करें, दूर होंगे रोग से।
अपनाएँ शाकाहार,
शुद्ध सात्विक आहार,
प्राणायाम व व्यायाम, ध्यान के प्रयोग से।
महत्व जो है जानता,
वही है इसे मानता,
योग दिवस वर्ष में, आता है संयोग से।

जैनेन्द्र प्रसाद 'रवि'
म.वि. बख्तियारपुर, पटना

योग भगाए रोग

सुबह-शाम करिये योग।
डरकर भागेगा रोग।।
कोरोना हो या कोई महामारी।
योग से भागे सभी बीमारी।।

सुबह-शाम की हवा।
लाखों की दवा।।
ये कथन है बड़े बुजुर्गो का।
आप सभी इसको करके तो आजमा।।

ऋषि मुनि न कभी हुए बीमार।
योग जड़ी -बूटी से किये बीमारी का उपचार।।
सुबह-शाम किये योगासन।
और दिये शिष्यों को शासन।।

जो बच्चे नित्य करेगा योगा।
वहीं बनेगा एक दिन दारोगा।।
जो् कभी नहीं करेगा योगा।
बीमार होकर जल्द मरेगा।।

जो किया योग वह बन गया योगी।
उनका नाम है बाबा दरोगी।।
जो नहीं किया योग वह बन गया रोगी।
वह अपने कर्म का अपने है भोगी।।

योग दिवस की सबों को बधाई।
करो योग भगाओ बीमारी भाई।।
अगर जिंदगी है सौ साल से ऊपर जीना।
करो सुबह-शाम योग इसे कभी नहीं छोड़ना।।

आओ भाई और आओ मेरी बहना।
रोज नित्य दिन योग तुम करना।।
दादी, नानी का यही कहना।
यही है जीवन का असली गहना।।

नीतू रानी
म०वि०सुरीगाँव
प्रखंड -बायसी
जिला-पूर्णियाँ बिहार।

योग की महिमा

आएँ अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर ,
योग खुद करें और करवाएँ ।
बिना किसी गाफिल के हर दिन ,
सबको यह अच्छी आदत डलवाएँ ।।

मन से तन को जो जोड़े विधा,
सच में वही योग कहलाए ।
इससे मन प्रफुल्लित रहे सदा
और तन को भी अधिक सुहाए ।।

बड़ी महिमा है योग की ,
और यह ही सबका कारक ।
इससे बढ़कर कोई नहीं धरा पर ,
तन, मन के लिए अति सुखकारक ।।

ध्यान , व्यायाम और प्राणायाम भी ,
योग में होते बेहद खास ।
जो नर नारी नित्य करते इसे,
स्वास्थ्य रहता उनके पास ।।

स्वस्थ रहना जीवन में ,
है बहुत महत्त्व की बात ।
इससे तन की शक्ति बनी रहे
और मन में लगे न कोई घात ।।

योग से ही स्पंदित होते ,
तन में ऊर्जा का संचार ।
तन की शक्ति यदि मन से जुड़े ,
तो मिले सुखद सिद्धि अपार ।।

कई रूप प्राणायाम के ,
जो जीवन को देते हैं नव आस ।
अनुलोम विलोम और भस्त्रिका ,
होते बेहद इनमें खास ।।

ध्यान इसमें प्रभु का धरें,
तब मन हो बहुत उजास ।
वृहत प्रकृति से दोस्ती करें,
तब तन को भी मिले प्रकाश ।।

एक व्यायाम चलना भी ,
पर तेज कदमों के साथ ।
तन इससे अधिक स्वस्थ रहे ,
औ मन में विकार न आए हाथ ।।

तन मन की स्फूर्ति बनी रहे ,
यदि योग नित्य हो जाए ।
अच्छे स्वास्थ्य की कामना ,
इससे ही नित बन पाए ।।

ऐसा संकल्प मन में लें सभी ,
कभी योग न छूटने पाए ।
यह बचपन से बुढ़ापा तक ,
रोग को हमेशा दूर भगाए ।।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक
विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

Yoga: A delight

Yoga is a fun to play,
We breathe and stretch in a special way.
Tree's strong, Mountain's high,
Let's touch soul and Sky.

Cobra stretch, Butterfly we do,
It's so cool for me and you.
We breathe deep to relax our mind,
It does magic one of a kind.

We sit quietly and calm our soul,
It's a peace, makes us whole.
We stretch and feel so free,
It's a wonder, everyone thinks it's for me.

We twist and turn, bend with glee,
It's a venture for you and me.
With happy poses, smiles so right,
It's a joy, a shine and a delight.

Ashish Kumar Pathak
School -Incharge
Middle school Sarha Dharhara
Munger Bihar

आओ कर लें योग

आओ करलें योग हम, निशि-दिन रहें नीरोग।
शुद्ध-सात्विक आहार का, भोजन में करें प्रयोग।।
अल्परूप में भोजन करें , फल सलाद के संग।
तीन गुना जल सेवन करिये , चढ़ेंगे तन पर रंग।।

सुबह उठकर सैर पर जाएं,हमको मिले शुद्ध हवा।
मिले ताजगी तन मन में फिर, कई रोगों की दवा।।
योग के आठ अंग को जाने, और करें फिर योग।
बिना योग के हम पाते हैं, जीवन में बस सोग।।

यम ,नियम, आसन, प्राणायाम,ये हैं सुन ले चार ।
प्रत्याहार, धारणा, ध्यान समाधि, मिलकर आठ प्रकार।।
योग करोगे स्वस्थ रहोगे,सुन सखा, बंधु, मनमीत।
बिना योग के बनोगे रोगी, जीवन होगा भयभीत।।

योग गुरु से सीख- सीखकर, सब मिल करें अभ्यास।
अनुलोम-विलोम, कपालभाँति, भस्त्रिका,ये तीनों हैं खास।।
योगों में भी श्रेष्ठ हैं सुन ले, मनोयोग हरि ध्यान।
आत्म-तत्व का ज्ञान हो जिनसे, और मिले निर्वान।।

मनु कुमारी
, मध्य विद्यालय सुरीगाँव,बायसी पूर्णियाँ

योग करें

रखें नियमित सदाचरण,काया करें नीरोग।
नित्य संयमित योगासन, जड़ से भागे रोग।।
रवि देव को नित प्रभात, साक्षात नमन करें।
अलौकिक रश्मि वाहिकाएँ, रोग-व्याधि सब हरे।।

शुद्ध खाद्य का कर भोग, तन को कर सहयोग।
हर रोज योग का करें, सदा सर्वदा प्रयोग।।
सबल काया निखरेगी, व्याधि का हो वियोग।
दिनचर्या में फल सलाद, सर्वदा कर उपयोग।।

हर्षित जीवन उच्च विचार, आयु में जगा जोग।
योग की महिमा विलक्षण, तन भी बनें निरोग।।
रुग्ण काया जीव संचरण में, आत्मा को विस्मित करें।
योग-साधना सुख श्वास दे, चिंता से मुक्त करें।।

अनुलोम-विलोम प्राशन, करें रोग पर जीत।
सबल जीवन अपनाकर, करें योग से प्रीत।।
योग-अभ्यास अपनाकर, करें मन सदुपयोग।
युग में योग अराधना, चैतन्य का संयोग।।

अश्मजा प्रियदर्शिनी
मध्य विद्यालय डुमरी फतुहा पटना

आज से स्कूल है जाना

सखी छंद

पाकर पावस की बूँदें।
है कहती अखियाँ मूँदें।।
प्रेमा चाह रही सोना।
देर रुकें तो क्या होना।।

मौसम खूब लगे प्यारा।
गर्मी अबतक था मारा।।
भोर हुई, घंटा बीता।
माँ बैठी पढ़ने गीता।।

चाय सभी पीने बैठे।
देख नहीं उसको ऐंठे।।
आज से स्कूल है जाना।
शिक्षक कहें सभी आना।।

स्वागत सारे पाएँगे।
बच्चे खुशी मनाएँगे।।
हाल अपना सुनाएँगे।
सारे हाथ मिलाएँगे।।

प्रेमा करना तैयारी।
देर नहीं हो तुम्हारी।।
नींद त्याग प्रेमा आई।
देख पिता को मुस्काई।।

नास्ता करने मैं आई।
माँ क्यों अभी नहीं लाई।।
बस्ता लेकर जाऊँगी।
मैं चंदन लगवाऊँगी।।

देर नहीं होने पाएँ।
जल्दी से खाना खाएँ।।
कौन हमें पहुँचाएगा?
कोई बात बताएगा!

प्रेमा नयी नवेली सी।
सोची एक पहेली सी।।
भाए स्कूल सहेली सी।
दौड़ लगायी चेली सी।।

शौक जगी उसमें भारी।
रोज सबेरे हीं सारी।।
काम सभी निपटाएगी।
स्कूल समय से जाएगी।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश, पालीगंज,
पटना, बिहार

बच्चों का स्वागत

ग्रीष्मावकाश बाद स्कूल खुले हैं।
बच्चे घर से बस्ता लेकर स्कूल चले हैं।।
बच्चों के चेहरे पर मुस्कान लौट आई।
स्कूल पहुँचने पर शिक्षकों ने खुशी जताई।।
विद्यालय परिवार ने पूरे गर्मजोशी से बच्चों का स्वागत किया।
बच्चों ने भी अपने ग्रीष्मावकाश कार्य को पूरा कर लिया।।
शिक्षकों ने ऐसा माहौल बनाया।
बच्चों ने इसपर खुशी जताया।।
हँसते-खेलते बच्चे लगते ऐसे।
मानो छुट्टी बाद स्कूल नहीं लगता बोझिल जैसे।।
आओ हम सब मिलकर बच्चों के बीच ऐसा माहौल बनाएँ।
शिक्षा के प्रति उनकी ललक को और जगाएँ।।
चंदन लगाकर, हाथ मिलाकर हम सब ने बच्चों का स्वागत किया।
बच्चों ने भी बड़े हीं आदरपूर्वक हम सब का अभिवादन किया।।

मृत्युंजय कुमार
नवसृजित प्राथमिक विद्यालय खुटौना यादव टोला
पताही,पूर्वी चंपारण

विनती करूँ मैं भगवान

विनती करूँ मैं भगवन ,
तुम अपना मुझे बना लो ।
हर अज्ञानता के पर्गो से ,
तुम मुझे बचा लो ।।
जीवन दिए हो भगवन ,
साँसों को तुम्हीं सम्भालो।
हर मुसीबत की घड़ी में ,
सब बाधा तुम हटा लो।।
भटक जाऊँ न कहीं मैं ,
कठिन मार्ग से उबारो ।
मेरे ज्ञान की परतों को ,
तुम नित्य प्रति निखारो ।।
बात बनती है तुम्हीं से ,
कोई कुछ न कर पाए ।
सर्वज्ञ हो तू भगवन ,
सब तुम्हारे ही गीत गाए ।।
इस धरा का फूल हूँ मैं ,
तुम्हीं हो पालनहारे ।
तुम्हारे बिना न कोई ,
सबके तू ही हो सहारे ।।
ज्ञान का मैं भूखा ,
मेरी अज्ञानता मिटा दो ।
मेरे सारे कर्मों में तू ,
सद्ज्ञान को मिला दो ।।
भरोसा करूँ मैं किसका ,
तुम्हीं नाथ हो हमारे ।
मेरी जिंदगी तुम्हीं हो ,
सब आसरा हवाले ।।
तेरी शरण हूँ आया ,
यह बात है अर्पण की ।
चाहता कृपा मैं तेरी ,
यह पुकार है बचपन की ।।
मेरी प्रार्थना बचपन की ,
सब गलती भी माफ करना ।
तेरे चरणों में मेरी भक्ति ,
इसकी भी लाज रखना ।।

अमरनाथ त्रिवेदी
पूर्व प्रधानाध्यापक
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

भरना इन्हें उड़ान है

प्रदीप छंद गीत

बच्चों को हम बच्चा मानें, देना उनको ज्ञान है।
नहीं बोध है इनमें ज्यादा, भरना इन्हें उड़ान है।।
कहते कोरा कागज उनको, गढ़ना उनके सोंच को।
प्रसन्नता का हम भाव भरें, दूर करें उत्कोच को।।
सिखलाएँ हम ऐसी बातें, जिससे बनें महान है।
नहीं बोध है इनमें ज्यादा, भरना इन्हें उड़ान है।।०१।।
समझ अभी तो आधी इनकी, हसरत पालें हैं बड़े।
जोश अनूठा हरपल रखते, तत्पर रहते हैं खड़े।।
आओ जोश को गति सही दें, जो जग से अनजान हैं।
नहीं बोध है इनमें ज्यादा, भरना इन्हें उड़ान है।।०२।।
कहते कच्ची मिट्टी इनको, रूप गढ़ें नव कुंभ का।
प्यासे जग का त्राण करेंगे, हनकर शुंभ-निशुंभ का।।
आलोकित कर दें पथ इनका, रोके नहीं थकान है।
नहीं बोध है इनमें ज्यादा, भरना इन्हें उड़ान है।।०३।।
लिए बहुत हसरत को मन में, चलते अपनी राह को।
देख रहें थोड़े साधन से, अपनी अनंत चाह को।।
इनको संयम पाठ पढ़ाएँ, कम करना हलकान है।
नहीं बोध है इनमें ज्यादा, भरना इन्हें उड़ान है।।०४।।
जीवन का सब मर्म बताएँ, सिखलाकर व्यवहार में।
सीमित रहें न पुस्तक तक हीं, कुशल बनें संसार में।।
सदाचार रग-रग में भरना, पाठक का यह मान है।
नहीं बोध है इनमें ज्यादा, भरना इन्हें उड़ान है।।०५।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश, पालीगंज, पटना,
बिहार।

मौसम हुआ सुहाना है

पावस ऋतु की छटा निराली,
चिड़िया फुदके डाली-डाली,
मेघों ने है दौड़ लगाया ,
बच्चों का है मन हर्षाया,
उमड़ रहे हैं बादल नभ में,
छम-छम-छम जल बरसाना है।
अब मौसम हुआ सुहाना है।।
गाँव में जो खिला है बचपन,
बच्चों का है ये नंदनवन,
ताल – तलैया भरे पड़े हैं,
बच्चे जिद पर अड़े खड़े हैं,
उमंग तन-मन में भरना है,
अब मस्ती खूब मनाना है।
अब मौसम हुआ सुहाना है।
बच्चे उतर गए पानी में,
खुशी झलक रही वाणी में ,
पकड़म-पकड़ी आँखमिचौली,
आओ मिल खेलें हमजोली,
प्यारी बिटिया चित्र बनाती,
कागज में रंग सजाना है।
अब मौसम हुआ सुहाना है।।
तरुवर को हम मित्र बनाएँ,
प्रकृति युक्त जीवन अपनाएँ,
धरती पर फैले हरियाली,
जीवन में आये खुशहाली,
पौध लगाकर करे संरक्षित,
यह जन-जन को समझाना है।
अब मौसम हुआ सुहाना है।।

रत्ना प्रिया
उच्च माध्यमिक विद्यालय माधोपुर
चंडी ,नालंदा

शिक्षा का जीवन में महत्व

खेल खेल में करो पढ़ाई।
नही करो एक दूसरे से लड़ाई।।
पढ़-लिख कर अपना नाम करो।
दिल में ईश्वर का ध्यान धरो।।
पढ़ाई लिखाई नही होता बेकार।
एक दिन करता हर एक सपना साकार।।
शिक्षा का महत्व तब समझ में आता है।
जीवन में जब कहीं किसी मोड़ पर ठोकर लग जाता है।।
आओ बच्चों पढ़ाई करो।
जीवन के उच्च पथ पर चढ़ाई करो।।
हर सपना होता साकार।
शिक्षा हीं है सबका आधार।।
एक दूसरे का करना सम्मान।
नही करना कभी किसी का अपमान।।
शिक्षा बिन जीवन लगता अधूरा।
शिक्षा से ही होता जीवन का हर सपना पूरा।।

मृत्युंजय कुमार
नवसृजित प्राथमिक विद्यालय
खुटौना यादव टोला
पताही,पूर्वी चंपारण

बायस्कोप

यह बचपन है मेरा तेरा,कह लो अब है बदला एरा
अपने थे हुए पराए अब,बस रह गई यही निशानी है।
यह सच्ची भली कहानी है।।
हम सारे जब बच्चे होते,सारे विचार कच्चे होते,
यह जादू बॉक्स लिए दिखते,तब चीज लगे मस्तानी है।
यह सच्ची भली कहानी है।।
अब बच्चे देते नहीं मान,हम सब देते थे जान प्राण,
हम जुड़कर बीती बातों से,हम पाते नयी रवानी है।
यह सच्ची भली कहानी है।।
मरुभू की यह हरियाली थी,यह मदभरी रस की प्याली थी,
दिन-रात रहे थे नशा लिए,यह लंबी बात पुरानी है।
यह सच्ची भली कहानी है।।
हर चीज नया होने को था,कुछ रहता तब!खोने को था,
वह जड़ है तन अभी दिखता,चित्रदर्शी की कहानी है।
यह सच्ची भली कहानी है।।
मधु-चित्र सभी हैं बंद यहाँ,अद्भुत चीजें हैं चंद यहाँ,
जो एक बार देखा इसको,कह उठा गजब दीवानी है।
यह सच्ची भली कहानी है।।
मम संग-संग यह जन्म लिया,हर द्रष्टा को यह दंग किया,
चित्रों में ऐसा लिपट गया, जैसे लिपटी मधुरानी है।
यह सच्ची भली कहानी है।।
जो आया है वह जाएगा,कल को कल आकर खाएगा,
आया है युग मोबाइल का,अभी लिए नई जवानी है।
यह सच्ची भली कहानी है।।

रामपाल प्रसाद सिंह 'अनजान'
मध्य विद्यालय दरवेभदौर प्रखंड
पंडारक पटना बिहार

सामाजिक बदलाव में स्कूल की भूमिका

बच्चों में नूतन ज्ञान देकर ,
शान से हम उन्हें बढ़ाएँ ।
सामाजिक बदलाव की प्रक्रिया में ,
हम उन्हें ऐसे शामिल कर पाएँ ।।
हो न कसक किसी तरह की ,
परिवर्तन का नव युग है आया ।
ज्ञान है यदि सबके मन मंदिर में ,
तभी सामाजिक बदलाव का दौर समाया ।।
बढ़ते स्कूल के नए चरण की ,
सामाजिक ताने बाने उत्तर दे रहे हैं।
कल्पना से भी परे होकर ,
कई बच्चे शाबाशी ले रहे हैं ।।
यही है एक शोर बहुत ही ,
जो सुनाई दे रहा है ।
अमित आकर्षणों के बदौलत ही ,
यह स्वरूप विशाल ले रहा है ।।
हमेशा बदलाव की शक्ति ही ,
सृजनता की महती कारक ।
स्कूल भी अब तेजी से बदल रहे ,
है यह भी अति सुखकारक ।।
बड़े बदलाव की बयार भी ,
बह चली है ऐसी धरा पर ।
स्कूल भी बदलाव की ,
पटकथा लिख रहा स्व उर्वरा पर ।।
है शान की बात यह ,
अज्ञानता का लोप हो रहा है ।
ज्ञान की अभिवृद्धि से ,
अनगिनत अंधविश्वास भी खो रहा है ।।
समाज में बदलाव की ,
अभी जो सूरत दिख रही है ।
स्कूल ही वह महती कारक है ,
जो इस जीवंतता को लिख रही है ।
बिंब यदि स्कूल को माने ,
तो प्रतिबिंब ही समाज है होते ।
जैसी शिक्षा स्कूल मे मिलती ,
वैसे ही समाज भी ढोते ।
सामाजिक परिवर्तन में ,
स्कूल की भूमिका है जरूरी ।
इसके बगैर किसी परिवर्तन की ,
नहीं होती आस कभी पूरी ।।
सपने वही जो हकीकत बने ,
वहीं मार्ग प्रशस्त होता है ।
जीवन की सारी उपलब्धियों को,
परिवर्तन की उम्मीद ही ढोता है ।।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक
विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

झूम -झूमकर बरसो बादल

आओ बच्चों खुशी मनाएँ,
फुहारें वर्षा की घिर आई हैं ।
काले काले बादल नभ में ,
यह बहार बन छाई है ।।

नभ में बादल घूम रहे ,
ये काले काले मतवाले हैं ।
इनसे पानी बरस रहे ,
हम नाच रहे दिलवाले हैं ।।

गर्मी से सब झुलस गए थे ,
यह आज खुशी बन आई है ।
उमड़ घुमड़ कर बरसे बादल ,
नभ में फिर बहार बन छाई है ।।

हम बच्चे नादान अभी हैं ,
पर बातें हैं कुछ पता हमें ।
खूब बरसो पानी धरा पर ,
न पानी बरसना अभी थमे ।।

जो मुरझा चुके थे गर्मी से पौधे ,
उनमें लौट आई हरियाली है ।
हम बच्चे बड़ी मस्ती में ,
दिल में भी छाई खुशियाली है।।

अच्छी वर्षा होने पर ही
धरती हरी भरी भी दिखती है ।
हर जीव में रंगत आता है ,
और प्रकृति भी बेहद खिलती है ।।

बादल तुझे बहुत बरसना ,
अभी सारी धरती प्यासी है ।
अभी बादल तुम और गरजना,
हर डगर भी बड़ी उदासी है ।।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक
विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

हरिप्रिया छंद

आओ समझें ऐसे,
गढ़ें संबंध जैसे,
बनता समाज वैसे, प्रकट करे ललिता।
सीख परिवार देती,
आस-पास की खेती,
विद्यालय संजोती, दिव्य ज्ञान सरिता।
भाव भिन्नता पाले,
अनेक बोली वाले,
रखते सोच निराले, एक रूप सविता।
बालको के बीच में,
शिक्षक के समीप में,
सीख लेते रीत में, भाव धरें समिता।
ऊँच- नीच को छोड़े,
सभी रूढ़िवाद तोड़े,
सम भाव नेह जोड़े, विद्यालय सबमें।
मानक रूप सीखते,
विकार हाथ खींचते,
नवीन आँख मीचते, दुर्गुण से सहमें।
शंका समाधान होता,
संस्कृति मिलान होता,
अनुभव महान होता, रहे नहीं गम में।
सहज सूचना पाकर,
समन्वय को बनाकर,
व्यक्तित्व को बढ़ाकर, समाज के मन में।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज पटना।

नशा मिटाएँ

योग छंद

हालत अपनी हरपल, हमें बताएँ।
आदत कोई भी हो, नहीं लगाएँ।।
हो चाहे कैसी भी, उसे छुड़ाएँ।
मिलकर हम-सब अब तो, नशा मिटाएँ।।
दुर्गंधों से हरपल, घ्राण बचाएँ।
आओ मिलकर दुख को, दूर भगाएँ।।
भटक गये लोगों को, राह दिखाएँ।
टूट रहे रिश्तों को, हृदय लगाएँ।।
नशा मुक्ति को अपना, हाथ बढ़ाएँ।
क्योंकर सभी नशा में, समय गवाएँ।।
छोड़ इसे जीवन को, स्वर्ग बनाएँ।।
शुद्ध हवा पानी हीं, प्राण बचाएँ।
मानसिक विकार यह, नाश कराएँ।
क्षणिक उल्लास दे, शांति मिटाएँ।।
आओ नशा त्यागें, समझ बनाएँ।
स्वस्थ रखें तन अपना, ज्ञान बढ़ाएँ।।
दृढ करिए इच्छाएँ, मान कमाएँ।
मान प्रतिष्ठा अपनी, दांव लगाएँ।।
नशा त्याग कर देखें, सिर न झुकाएँ।
सुन पाठक की बातें, ज्ञान बढ़ाएँ।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज पटना।

विद्यालय और सामाजिक बदलाव

शिक्षा समाज का किस्सा है।
विद्यालय इसका हिस्सा है।।
विविध रूप जो बोल रहे हैं।
स्व परिवेश को घोल रहें हैं।।
विद्यालय भाव जगाता है।
समता का पाठ पढ़ाता है।।
नवाचार यह अपनाता है।
शुभ विचार भी सिखलाता है।।
समय बदलना समझाता है।
जीवन पल-पल सिखलाता है।।
बच्चा विद्यालय आता है।
सुनियोजित पथ वह पाता है।
समता का भाव पनपता है।
गिरकर बच्चा सम्हलता है।।
तन-मन से सभी निखरता है।
सपनों को पर भी मिलता है।।
यह मानक रूप बताता है।
निर्णय की क्षमता लाता है।।

विद्यालय पाठ पढ़ाता है।
बच्चा समाज में लाता है।।
वैसा हीं बाग महकता है।
जैसा प्रसून वह रखता है।।
रजकण समाज में उड़ता है।
विद्यालय जैसा चलता है।।
दोनों हीं पूरक होता हैं।
सदा बदलाव जो बोता हैं।।
विद्यालय ज्ञान बढ़ाता है।
संशय को दूर भगाता है।।
राह सभी को दिखलाता है।
नव समाज सदा बनाता है।।
गुण-अवगुण का बोध कराता है।
सतत बदलाव यह लाता है।।
जीवन सुखमय जो पाना है।
समाज को सभ्य बनाना है।।
विद्यालय सही चलाना है।
पाठक को पाठ पढ़ाना है।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज पटना।

सारे जग में नाम होगा उसी का

सारे जग में नाम होगा उसी का ,
जिसके कर्मों से भाग्य जुड़ेगा सभी का ।
जो हर कदम पर अपना और पराया न बोए ,
जिससे मिलकर कभी जमाना न रोए ।
उदासी की महफिल न उसके चमन में ,
नाम लेता हर शख्स अपने ही अमन में ।
जो मन से अधिक दिलों से काम लेता ,
वही अपने वतन को अधिक कुछ देता ।
जिसकी चाहत अपनी कुछ भी नहीं है ,
दूसरों के खातिर यह बहुत कुछ सही है ।
जिसे पराई कमजोरी कभी दिखाई न देता ,
पर अपने कर्मों का कभी कोई लेखा न लेता ।
वह सब जानता , समझता पर चिल्लाता नहीं है ,
उसकी सफलता की सूरत किसी को लखाता नहीं है।
जमाने की खुदगर्जी न उसे पहचान पाती ,
उसके दिल के दर्दों को न कोई मान पाती ।
दिल से जो बड़ा है दरअसल वही बड़ा हुआ है ,
उसके हर एक शब्द में दुआ ही दुआ है ।
जो सोचता , समझता है वही वह करता ,
पर अपने लिए कभी न कोई फिक्र करता ।
उसे दिखावे की कभी कोई चाहत न होती ,
उसे जमाने की दगा से कोई राहत न होती ।
फिर भी वह मुस्काता दर्द जताता नहीं है ,
जमाने की फितरत को कभी बताता नहीं है ।
ऐसे इंसा ही भगवान के प्रतिरूप होते ,
जो दूसरों के दर्द में अपना दर्द खोते ।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

जगन्नाथपुरी रथयात्रा

उत्कल प्रदेश में चलें, जहाँ ईश का धाम।
शंख- क्षेत्र, श्रीक्षेत्र है, उसी पुरी का नाम।।०१।।
युगल मूर्ति प्रतीक बने, बसे यहाँ अभिराम।
श्री जगन्नाथ पूर्ण हैं, एक कला घनश्याम।।०२।।
गुंडीचा बाड़ी यहाँ, वर्णन करे पुराण।
जहाँ देव शिल्पी किए, प्रतिमा का निर्माण।।०३।।
इंद्रद्युम्न महिप बसे, नीलांचल के पास।
काष्ठ सिंधु में था मिला, लिए रूप हरि खास।।०४।।
प्रतिमा निर्मित अर्ध हीं, अब भी रहा विराज।
विश्वकर्मा किए नहीं, रहा अधूरा काज।।५४।।
शुक्ल द्वितीया आषाढ़ को, रथयात्रा प्रारम्भ।
रथ परंपरा का हुआ, सदी पूर्व आरंभ।।०६।।
भ्रमण द्वारिका का करें, यही सुभद्रा आस।
यात्रा प्रतीक आज है, रखतें हम विश्वास।।०७।।
संग सुभद्रा राजती, साथ सदा बलराम।
नंदीघोष ऊपर से, रथयात्री है श्याम।।०८।।
पावन यात्रा श्याम का, होता है हर वर्ष।
महाप्रसाद ग्रहण करें, पाएँ शुभता हर्ष।।०९।।
स्पर्श रथरज्जु का करे, भव बंधन से मुक्त।
दया भाव अनुनय करे, पाठक लधिमा युक्त।।१०।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश, पालीगंज, पटना, बिहार।

प्रकाश संश्लेषण

विधा दोहें

जिज्ञासा बच्चे लिए, गुरुवर करें निदान।
कैसे भोजन पेड़ में, बनता है श्रीमान।।०१।।
कैसे पोषण पा रहा, इसका कहें विधान।
प्रकाश संश्लेषण किसे, कहते हैं श्रीमान।।०२।।
हरित लवक जिस भाग में, मिलता सदा विशेष।
पल्लव हीं वह भाग है, होता इसका श्लेष।।०३।।
प्रकाशीय ऊर्जा जहाँ, बदला करता नित्य।
ऊर्जा रासायनिक बन, करता पोषण कृत्य।।०४।।
होती यह हर भाग में, पल्लव जिसमें खास।
मीसोफिल उत्तक जहाँ, लेता है विन्यास।।०५।।
मूलरोम शोषित करे, मृदा नीर पहचान।
वाहक बनता जाइलम, दल को करे प्रदान।।०६।।
कार्बन डाइऑक्साइड, खींच रहा दल रंध्र।
सूर्य किरण ऊर्जा भरे, हरित-लवक सह अंध्र।।०७।।
कार्बन डाइऑक्साइड, मिलकर जल के संग।
कार्बोहाइड्रेट बने, पोषण का है अंग।।०८।।
प्राणवायु फिर रंध्र से, करे वायु को तंग।
भेज रहा फ्लोएम है, पोषण सारे अंग।।०९।।
मानव, तरुवर जीव का, पोषण है आधार।
होता विकास अनुरूप हीं, करें सहज स्वीकार।।१०।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश,
पालीगंज, पटना, बिहार।

अब सुबह हुई जागो

क्या ऐसी सुबह होगी, जब दोष शमन होगा?
इस रात का अंधियारा,जब जड़ से खतम होगा,
घर घर की इक बाला, बालक भी सम होगा।
क्या ऐसी सुबह होगी, जब दोष शमन होगा?
प्रेम का आलिंगन, गठबंधन फेरों का,
निकाह में शर्तों का, आलिंगन डेरों का,
क्यों बेटी जले हरदम,दहेज की वेदी पर,
क्यों हलाला हुई बेटी, हैवान की नेति पर।
क्या ऐसी सुबह होगी, जब दोष शमन होगा?
तू अबला तबतक है,जबतक तू नहीं जगती,
तू शक्ति तू दुर्गा , तू काली कपालिनी है,
अब सुबह हुई उठ जा,अब दुष्ट दलन होगा ,
भारत की भूमि पर, देखो क्यों जले बेटी?
अब शमन हलाला का, सुन लो इसी पल होगा।
हाँ ऐसी सुबह होगी, अब दोष शमन होगा।
अब सुबह हुई जागो, अब दुष्ट दलन होगा,
समभाव व नव चेतन का,सृजन सफल होगा,
बस प्रेमानकुर होंगे, नहीं अब कोई छल होगा,
मानव का अंतर्मन, आनन्द विह्वल होगा।
अब ऐसी सुबह होगी, जब दोष शमन होगा।

डॉ स्नेहलता द्विवेदी "आर्या"
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज कटिहार

माँ तुम कितनी अच्छी हो

माँ
माँ तुम कितनी अच्छी हो
सब कुछ मेरा करती हो,
जब मैं गंदा होता हूँ
मुझे रोज स्नान कराती हो।
माँ तुम कितनी ———२।
जब मैं रोने लगता हूँ
तुम गोद में मुझे उठाती हो,
और तुम लोरी गा -गा कर
पीठ थपथपा कर मुझे सुलाती हो।
माँ तुम कितनी ——२।
सबसे पहले तुम उठती हो
फिर बाद में मुझे उठाती हो,
नित्य क्रिया कराकर मुझको
अच्छे संस्कार सिखाती हो।
माँ तुम कितनी ———२।
जब तुम बाजार जाती हो
मेरे लिए कुछ न कुछ लाती हो,
अपना भूखे रहकर तुम
भरपेट मुझे खिलाती हो।
माँ तुम कितनी ———२।
जब भी आता है कोई पर्व
मेरे लिए नये कपड़े लाती हो,
और तुम फटा पुराना कपड़ा पहनकर
घर में खुशियों की चिराग जलाती हो।
माँ तुम कितनी अच्छी हो।

नीतू रानी
उ०म०विद्यालय रहमत नगर,सदर मुख्यालय पूर्णियाँ बिहार।

प्रेम जहाँ पग-पग मिलता

देश हमारा सबसे न्यारा ,
लगता कितना प्यारा है !
जग के सारे देशों से ,
इसे प्रभु ने अधिक सँवारा है !
जग के सारे रस्में देखें ,
पर यहाँ की नहीं कोई सानी है ।
यह धरती बड़ा उर्वर है ,
इसकी भी अलग कहानी है।
जीवन मूल्य यहाँ होता ,
उसके कदर की अलग निशानी है ।
प्रेम जहाँ पग पग मिलता ,
उसकी अलग अलख जुबानी है ।
नहीं कभी किसी का कुछ लेना चाहा ,,
जोर जबरदस्ती के दम पर ।
नहीं कभी किसी का अहित करना चाहा ,
अति बेदर्दी के ग़म पर ।
आत्मीयता का शिरोमणि देश ,
प्रेम का पाठ पढ़ाता है ।
हर देशों में इसकी पहचान अलग ,
कभी नफरत नहीं सिखाता है ।
कभी नहीं संघर्षों की इच्छा ,
कभी नहीं चालाकी है ।
हरदम है सद्भाव दिलों में ,
यही इसकी बेबाकी है ।

भेद विभेद का पता इसे ,
यह शास्त्रों का भी ज्ञाता है ।
गूढ़ रहस्यों का पता इसे ,
सारे जग को भी सिखाता है ।
देश में देव देवियों की कमी नहीं ,
यहाँ पत्थर भी पूजे जाते हैं ।
हर नदी यहाँ माता होती ,
हम प्रेम से सब कुछ पाते हैं ।
केवल इधर उधर की बात नहीं ,
सारे जग में अलग मुकाम है ।
तन मन को भी सुख देनेवाला ,
अलग सुंदर इसका पैगाम है ।
आत्मीयता का ऐसा समंदर ,
कहीं और जगह नहीं देखा है ।
सारे जग से इसकी जैसी कीर्ति ,
नहीं और कहीं भी लेखा है ।
सुंदर सा मुस्कान चेहरे पर ,
यहाँ प्रेम से सब जुड़ पाते ।
काम भी अपना छोड़कर ,
दूसरों के काम में जुट जाते ।
नहीं किसी से है मुकाबला ,
इसकी शान भी बिल्कुल अलग है ।
यहाँ अस्थि भी दान दी जाती ,
यहाँ की परंपरा बिल्कुल विलग है ।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

सोशल मीडिया

रूप संचार का बदल रहा,
बदला अब सारा समाज है।
अंतरजाल सभी अपनाएँ,
बदला सबका काम-काज है।।
खुलकर मन की करते बातें,
परिवेश नया बना रहे हैं ।
आस-पास को भूलें अब तो,
दूरी कैसी मिटा रहे हैं।।
सपनें बदले अपने बदले,
सोशल मीडिया के संग में।
बच्चे, बृद्धा, जवां सभी की
आज नजरिया नये रंग में।।
काल्पनिक एहसास में सारी,
खुशियों को हम-सब पाते हैं।
जहाँ जागने से सोने तक,
सब भूलाकर रम जाते हैं।।
सूचनाएँ तो तीव्र हो गयी,
कर्तव्य कहीं तो खोया है।
सोशल मीडिया है जरूरी,
जिसमें यथार्थ बस रोया है।।
गलियों का शोर थमा सारा,
एकांत यहाँ लगता प्यारा।
बचपन को इसने छीन लिया,
यौवन भी इससे है हारा।।
रूप सलोना बड़े काम का,
प्रयोग सही नहीं हो पाया।
समझो बच्चों बात हमारी,
इसने तुझको है भरमाया।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज पटना।

समय सुहाने बचपन के

खेल- खेल में पढ़ते जाएँ।
जीवन को अनमोल बनाएँ।।
हम नए-नए खेलों को खेलें।
नई-नई खुशियाँ भी ले लें ।।
हम बच्चे देश के कर्णधार कहलाते।
हम हीं देश की शोभा बढ़ाते ।।
बचपन का समय बहुत सुहाना।
न कोई चिंता, न कोई फिक्र, बहाना।।
खेल- खेल में शरीर है बनता।
पढ़ाई-लिखाई से ज्ञान है बढ़ता।।
खेल-खेल में होती है मस्ती।
सबसे है यह होती सस्ती ।।
हम बालपन की अच्छी आदतें।
जीवन में कुछ कम हो शरारतें।।
भूल से कभी न यह काम करें हम।
बदनामी से बहुत डरें हम ।।
बदनामी कलंक का पर्याय है।
इससे बचने के बहुत उपाय हैं।।
गंदी आदतें हमें बदनाम कराती।
सकल लोक में नीचा हमें बताती।।
ऐसा वादा न करें कोई हम।
जिसे पूरा न कर सके कभी हम।।
झूठ की खेती कभी न करें।
ऐसे पाप से सदा बच के रहें।।
जो बोलें उसे करके दिखाएँ।
झूठी अफवाह कभी न फैलाएँ।।
इस धरती पर मूल्य उसी का होता।
जो अपना बहुमूल्य समय कभी न खोता।।
हम-सब भी जब समय की पहचान करेंगे।
तभी जीवन में ऊँची उड़ान भरेंगे।।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

आपके द्वारा दिया गया अमूल्य समय
हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि
आपके पास कोई सुझाव हो, तो
कृपया हमें अवगत कराएं, जिससे हम
और भी बेहतर कार्य कर सकें।

क्या आप बिहार के सरकारी विद्यालय के शिक्षक हैं ?
आपको अपनी रचना भी प्रकाशित करनी है ?
नीचे दिए गए वेबसाइट, ईमेल एवं व्हाट्सप्प के माध्यम से जुड़े।

writers.teachersofbihar@gmail.com

padhyapankaj.teachersofbihar.org

+91 7250818080 | +91 9650233010